Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 04 30 अप्रैल, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

वर्ष 2024 में विपक्षी एकता सपना या हकीकत

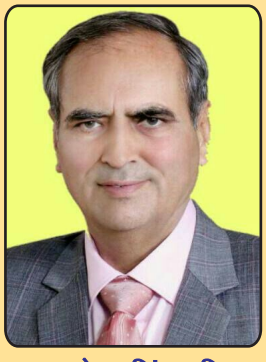

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

हरियाणा से इनेलो सप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला हों या पश्चिम बंगाल से ममता बनर्जी हों, पंजाब से प्रकाश सिंह बादल हों या फिर बिहार से नीतीश कुमार हों, या फिर बात करेंगे आंध्र पदेश से चंद्रबाबू नाडयू, कश्मीर से फारूक अब्बदुला की या तेलांगना से केसीआर राव की, ये सब नेता 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजय रथ रोकने के लिए निरंतर आह्वान करने वाले नेताओं में से एक हैं। असल में हम आज की परिस्थितियों में तो यही कह सकते हैं कि अभी दिल्ली दूर है और ऐसा कहने के पीछे कई कारण हैं। पहला तो कांग्रेस में पहली बार चुनावी प्रक्रिया से आए अध्यक्ष की बात को ही ध्यान में रखते हुए आगे बढते हैं। पिछले दिनों कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे के इस दावे को देखते हुए, कि अगले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नीत गठबंधन ही सत्ता में आएगा, यह निश्चित प्रतीत होता है कि वह नीतीश कुमार के नेतृत्व को स्वीकार नहीं कर सकते हैं, जो अपने उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के सहयोग से 2024 के संसदीय चुनाव में नरेंद्र मोदी की भाजपा को हराने के लिए विपक्ष का संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए क्षेत्रीय दलों को एकजुट करने का अथक प्रयास कर रहे हैं। असल में इसका कारण ये है कि कांग्रेस ने नीतीश कुमार के सामने दो विकल्प छोड़े हैं। पहला, नीतीश को कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन को स्वीकार कर लेना चाहिए, जिसने उनके समक्ष एक बड़ी दुविधा पैदा कर दी है।

दूसरा, यदि कांग्रेस नेतृत्व वाला गठबंधन अस्वीकार्य है, तो वह कांग्रेस को भूल जाएं और खुद को नए गठबंधन के प्रमुख के रूप में पेश करें, जिसमें ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल, के चंद्रशेखर राव, अखिलेश यादव जैसे गैर–कांग्रेसी सहयोगी शामिल होंगे। कांग्रेस ने नीतीश पर परोक्ष हमला तब किया, जब उसने कहा कि वह कुछ नेताओं की तरह भाजपा के साथ कभी नहीं गई, जो मोदी के खिलाफ समान विचारधारा वाले नेताओं के गठबंधन का नेतृत्व करने की उसकी महत्वाकांक्षा का संकेत था।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की सफलता को देखते हुए कांग्रेस के प्रतिनिधि राहुल गांधी को गठबंधन का नेता बनाने के प्रस्ताव का विकल्प चुन सकते हैं, अगर वह इसे अस्वीकार नहीं करते हैं, पर अगर ऐसा नहीं होता है, तो वे अंतिम क्षण के रणनीतिक कदम के रूप में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में दलित नेता खड़गे के नाम की घोषणा करके हैरान कर सकते हैं। आंकड़ों के अनुसार, 543 लोकसभा सीटों में से अनुसूचित जाति की सीटों की संख्या 84 है और दर्जनों सीटों के परिणाम इसी जाति के मतदाता तय कर सकते हैं, जो भाजपा के साथ–साथ अन्य दलों के गणित को उलट सकता है।

इन कवायदों को देखते हुए ये तो कहा ही जा सकता है कि देश की राजनीति का रुख 2024 की ओर मुड़ चुका है। राष्ट्रीय स्तर और प्रदेश स्तर के राजनीतिक दल 2024 की तैयारियों, दांव–पेंच और तिकड़मों में व्यस्त हो गए हैं। जिन राज्यो में इस वर्ष चुनाव होने हैं वहां का माहौल कुछ ज्यादा ही गर्माया हुआ है। विपक्ष इस बार 2024 का चुनाव फतेह करने का अवसर गंवाना नहीं चाहेगा लेकिन विपक्ष की जीत के बीच में एकता की एक बड़ी बाधा खड़ी है। विपक्ष ने 2014 और 2019 के आम चुनाव में एकता के प्रयास किये थे। असल में विपक्ष मोदी सरकार को केंद्र की सत्ता से हटाना तो चाहता है लेकिन चाहकर भी उसमें एकता स्थापित नहीं हो पाती।

कभी कभी आई.एन.सी के शरद पंवार के विपक्षी एकता के दो कदम आगे बढ़ते हैं और अडानी के विरुद्ध जे.पी.सी. की कारवाई की मांग को नकारते हुए तीन कदम पीछे हट जाते हैं। आम आदमी पार्टी के सर्वे सर्वा का दिमाग पार्टी को राष्ट्रीय स्तर का दर्जा मिलने पर सातवें आसमान पर पहुंच चुका है। निसंदेह आम आदमी पार्टी का लगभग 10 साल की अवधि में राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल करना इसके उत्थान व स्तर की बड़ी उपलब्धि है, लेकिन इसके साथ ही विपक्षी कुनबे के सिकुड़ते स्वरूप का भी सत्ताधारी दल को लाभ मिलेगा। एन.सी.पी., टी.एम.सी. तथा सी.पी.आई. का राष्ट्रीय दर्जा छिनते ही बीजेपी के विरूध विपक्ष में केवल 5 राष्ट्रीय दल कांग्रेस, सीपीआईएम, आम आदमी पार्टी, बीएसपी तथा नेशनल पीपुल्स पार्टी रह गई। जिनमें कांग्रेस के अलावा बाकी की विपक्षी दलों की क्षेत्रीय स्तर की ही पहचान है हालांकि इन सभी दलों में राष्ट्रीय पार्टी मानकों की आवश्यक जरूरतें मौजूद है और उसका बीजेपी के राष्ट्रीय प्रमुख प्रभुत्व को अवश्य फायदा होगा। महाराष्ट्र में श्री शरद पंवार की पार्टी राष्ट्रीय स्तर का दर्जा खो चुकी है लेकिन शरद पवार के राजनैतिक अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। इसके साथ ही बीजेपी के आलोचक व विरोधी भी जानते हैं कि उनके पास हिंदुत्व, राष्ट्रीयता या लाभार्थी राजनीतिक जैसे लोक लुभावन मुदे हैं जो कि मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के प्रतिभागियों के सर्कीण मंच व एजेंडा के मुकाबले अधिक प्रभावी है।

प्रमुख विपक्षी दलों में भी सुदृढ़ व एकरूप राजनैतिक तर्कशील विचारधारा नहीं बन रही। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री, डी.एम.के. प्रमुख एम.के. स्टालिन ने कांग्रेस के तीसरे मोर्चे को सिरे से नकारते हुये बीजेपी के खिलाफ सभी विपक्षी दलों को एकजूट होने के साथ सभी

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

विपक्षी दलों को इलैक्टोरल एकता के गणित को समझने की वकालत की। इसी प्रकार जम्मू–कश्मीर राष्ट्रीय कान्फ्रैंस अध्यक्ष फारूक अब्दुला का मत है कि यदि विपक्षी दल एकजूट होकर चुनाव जीतते हैं तो डी.एम.के. प्रमुख एम.के. स्टालिन को प्रधानमंत्री बनाना चाहिये, जबकि कांग्रेस अध्यक्ष मलिका अर्जुन खड़गे का विचार है कि किसी विशेष दल के जीतने व व्यक्ति विशेष को प्रधानमंत्री बनाने की बजाये सभी विपक्षी दलों को एकजूट होकर संयुक्त चुनाव लड़ने पर केंद्रित होना चाहिये।

एक समय आठ विपक्षी दलों ने आप के मनीष सिसोदिया की गिरतारी के विरूध पत्र लिखा था, तब भी कांग्रेस समेत 3 विपक्षी दलों ने ऐसा नहीं किया। यही स्थिति तेलंगाना में है, जहां पर चंद्रशेखर राव की बी.आर.एस. और कांग्रेस आमने–सामने हैं। इसलिय कांग्रेस विपक्षी एकता का आधार और उसमें अड़चन दोनों का काम करती हैं। जब तक कांग्रेस अहंकार का त्याग कर क्षेत्रीय नेताओं को उचित स्थान नहीं देती, तब तक विपक्षी एकता की बातें सफल नहीं होंगी और अडानी मुद्दे पर संसद में राहुल का साथ देने वाले सभी 16 विपक्षी दलों का एकजूट रह पाना भी आशंकित है। ममता बैनर्जी ने पहले ही घोषणा कर दी है कि वे 2024 का चुनाव अकेले लड़ेगी। यही विचार समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव का है। वामपंथी दल की अब केरल के अलावा कहीं उपस्थिति नहीं रही लेकिन उड़ीसा के पटनायक की बीजद तथा आंध्र प्रदेश में जगन रेड्डी की वाई.एस.आर. –सी.पी. किसी राजनैतिक शिविर में जाने की बजाये अपने–अपने राज्यों में रूचि ले रहे हैं। विपक्षी दलों की इस प्रकार की उठापठक व बेमेल विचारधारा के कारण सत्ताधारी दल बीजेपी द्वारा टी.एम.सी., आप आदि दलों के प्रमुख नेताओं व दिल्ली में सत्तासीन आप पार्टी के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को भ्रष्टाचार के चक्रव्यूह में फंसाकर एक प्रकार से प्रमुख राष्ट्रीय दल कांग्रेस के विपक्षी एकता के मंसूबों को विफल किया जा रहा है। केजरीवाल के सिर पर भी शासक दल की तलवार लटक रही है।

असल में विपक्षी एकता तभी संभव है, जब कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों के नेता सीटों के बंटवारे पर सहमत हों, जो राज्यों में संख्या बल के आधार पर होना चाहिए। राजस्थान, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश के अलावा मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब जैसे राज्यों में विपक्षी नेताओं को कांग्रेस को बड़ा हिस्सा देना होगा, जहां भाजपा के साथ उसका सीधा मुकाबला है। इसी तरह कांग्रेस और अन्य दलों को पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, दिल्ली में केजरीवाल, तमिलनाडु में स्टालिन, महाराष्ट्र में शिवसेना (उद्धव ठाकरे), उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव जैसे नेताओं के लिए मैदान खुला छोड़ना होगा, जहां उनका वर्चस्व है। नीतीश कुमार संयुक्त विपक्ष का चेहरा बन सकते हैं, क्योंकि वे क्षेत्रीय दलों को स्वीकार्य होंगे और सोनिया और राहुल सहित कांग्रेस नेताओं का उनके प्रति नरम रुख है, जो लालू प्रसाद यादव की पहल के कारण संभव हो सका। यदि वोटों के बंटवारे को टाला जा सकता है, तो अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा को पटखनी देने के लिए विपक्षी एकता की यह एक बड़ी ताकत होगी।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में जीत के बाद टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने विपक्ष की धुरी बनने की कोशिश की थी। उन्होंने स्वयं को विपक्ष का मुख्य चेहरा साबित करने के लिए कोलकाता से प्रयास किया, लेकिन दाल गलती न देख वो दिल्ली से दूरी बनाए हुए हैं। महाराष्ट्र से शरद पवार ने भी विपक्ष का मुख्य चेहरा बनने की कोशिश की। महाराष्ट्र में महाअघाड़ी गठबंधन बनाने के बाद से उन्हें ऐसा लग रहा था कि महाराष्ट्र में एनसीपी–कांग्रेस और शिव सेना का सफल गठबंधन देश की राजनीति को एक नयी दिशा दिखाएगा। उद्धव ठाकरे की सरकार गिरने के बाद से महाअघाड़ी कितने दिन तक मंच पर रहेगा ये गंभीर प्रश्न है।

हाल ही में नीतीश कुमार ने कांग्रेस के सामने विपक्षी एकता का पत्ता चला है। लेकिन, इस पर कांग्रेस ने नीतीश के बयान का स्वागत भी किया और कई सवाल भी खड़े कर दिए। इससे स्पष्ट हो गया है कि विपक्षी एकता फिलहाल एक अवधारणा के तौर पर ही काम कर रही है। नीतीश कुमार ने विपक्षी एकजुटता के लिए कांग्रेस की पहल का आग्रह किया है। उनका दावा है कि यदि 2024 में भाजपा बनाम विपक्ष का साझा उम्मीदवार के आधार पर चुनाव लड़ा जाता है, तो भाजपा 100 सीटों तक सिमट सकती है। बहरहाल कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता जयराम रमेश ने नीतीश के आग्रह और अपील का स्वागत किया है, लेकिन बिना नाम लिए यह तंज भी कसा है कि कुछ लोग विपक्ष की बैठकों में भाग लेते हैं, विपक्षी एकता के सरोकार भी लगातार जताते रहे हैं, लेकिन वे सत्ता–पक्ष की गोद में भी बैठते रहे हैं। श्रीनगर में बुलावे पर नहीं आना जबकि केसीआर के बुलावे पर अखिलेश, केजरीवाल के साथ रैली करना और नीतीश का उनसे मिलना भी कांग्रेस को नागवार गुजरा है। मायावती

का रुख भी कांग्रेस गठबंधन के लिहाज से सही नहीं मानती है। इसीलिए कांग्रेस यह मानती है कि इस तरह राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता सम्भव नहीं है।

वर्ष 2014 के चुनाव में नरेंद्र मोदी राजग का चेहरा थे और भाजपा ने 282 सीटें जीतीं और राजग का कुल आंकड़ा 336 था, जिसमें 29 सहयोगी दल थे, हालांकि 13 छोटे दलों का स्ट्राइक रेट शून्य था। भाजपा ने 2019 में छोटे दलों के अलावा 11 राज्यों में गठबंधन किया और स्वतंत्र रूप से 303 सीटें जीतीं। विश्लेषकों का कहना है कि पंजाब में अकाली दल, महाराष्ट्र में शिवसेना, कश्मीर में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी, असम में असम गण परिषद और अब बिहार में जद (यू) की राजग से विदाई ने 2024 के संसदीय चुनावों में स्ट्राइक रेट बनाए रखने की भाजपा की रणनीति पर सवालिया निशान लगा दिया है, इसलिए हाईकमान नई रणनीति अपना सकता है।

कई राज्यों, विशेष रूप से दक्षिण में भाजपा अपने बूते खड़ी नहीं हो सकती, इसलिए सहयोगी तलाशना जरूरी हो गया है। महाराष्ट्र में ऑपरेशन लोटस की सफलता के बाद बिहार की बारी थी, लेकिन नीतीश कुमार उद्धव ठाकरे नहीं थे, जो सत्ता गंवा बैठें। इसलिए नीतीश ने भाजपा का साथ छोड़कर अपने विरोधी राजद को गले लगा लिया और नई सरकार का गठन किया। विभिन्न कारणों से 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों के बीच 15 राजनीतिक दलों ने राजग छोड़ दिया। भाजपा राज्यों में नए प्रभावी साझेदार बनाने के लिए संघर्ष करेगी, हालांकि वह छोटे दलों पर ध्यान केंद्रित कर रही है। विपक्षी दलों को बढ़त मिली है, बशर्ते उनके नेता अपने अहंकार और अति महत्वाकांक्षा से बाहर आएं।

नीतीश कुमार के सहयोगी और उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव निश्चित रूप से बड़ी भूमिका निभाएंगे। सिंगापुर से सफल इलाज कराकर लौटे लालू प्रसाद यादव इस कवायद को नया आयाम देंगे, क्योंकि वह तेजस्वी का मार्गदर्शन कर सकते हैं, जो पहले से ही कई मुख्यमंत्रियों और गैर–भाजपा पार्टी नेताओं से मिल चुके हैं। लालू यादव के सोनिया एवं राहुल गांधी से अच्छे रिश्ते हैं, जो भाजपा को चुनौती देने के लिए महत्वपूर्ण चेहरे होंगे। लेकिन क्षेत्रीय दलों के अहंकार, पारस्परिक स्वार्थ और आंतरिक बाधाओं के चलते विपक्षी एकजुटता मृग मरीचिका लग सकती है, इसलिए विपक्ष के लिए दिल्ली अभी दूर है।

चुनावी यथार्थ यह भी है कि देश के 17 राज्यों में कांग्रेस का एक भी सांसद नहीं है। कुल मिलाकर कांग्रेस को पता है कि वो अपनी कीमत पर अपनी जमीन क्षेत्रीय दलों के हवाले नहीं करना चाहती है और कई राज्यों में क्षेत्रीय दल कांग्रेस को दोबारा पनपने या मजबूत होने नहीं देना चाहते। हालांकि, कांग्रेस सूत्रों के मुताबिक, 2024 के पहले राज्यों के चुनावों के बाद दिसम्बर के आस–पास गठबंधन की सही तस्वीर सामने आएगी, तब सबकी असली स्थिति भी सामने होगी। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार आज जो विपक्षी मोर्चा आकार ग्रहण कर सकता है, वह संपूर्ण लामबंदी नहीं होगा। राष्ट्रीय मोर्चा भी नहीं होगा। राज्यों के स्तर पर, सुविधा के मुताबिक, गठबंधन किए जा सकते हैं। इसके साथ यह भी एक तथ्य है कि विपक्षी दलों का स्वरूप व गठबंधन मजबूती की ओर बढ़ रहा है और यदि समूचा विपक्ष एकजुट होकर सिंगल यूनिट के सूत्र से चुनाव लड़ता है तो बी.जे.पी. विरोधी वोटों के बटने के बहुत कम चांस रह जाएंगे जिससे वर्ष 2024 के चुनाव की तस्वीर बदल सकती है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

''शिक्षक''

– रामचन्द्र पन्नू

किसी ने शिक्षक से पूछा क्या करते हो आप ?
शिक्षण शिक्षा या सुन्दर जवाब .....
सुन्दर सुर सजाने को साज बनाता हूँ,
नोसिखिए परिन्दों को बाज बनाता हूँ।
चुपचाप सुनता हूँ शिकायतें सबकी,
तब दुनियाँ बदलने की आवाज बनाता हूँ।
समुन्दर तो परखता है हौंसले पक्षियों के,
और मैं डूबती किस्तियों के जहाज बनाता हूँ।
बनाए चाहे चाँद पे कोई बुर्जे खलीफा,
और मैं तो कच्ची ईंटों से ही 'ताज' बनाता हूँ।
घड़कर गरीबों को भी सरताज बनाता हूँ,
लाल बहादुर जैसों के सिर पे ताज सजाता हूँ।
और कुछ भी बनाता हूँ परखो मुझको...
सरहद पे लडने वाले जवान बनाता हूँ।
माँ धरती क्या सीना चीरने वाले किसान बनाता हूँ,
स्वच्छ भारत की प्रेरणा देने वाले इन्सान बनाता हूँ।।

राजा नाहर सिंह (1823-1858)

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

जंग–ए–आजादी, 1857 भारत के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। यह सामान्य घटनाक्रम की एक कड़ी नहीं बल्कि एक निर्णायक मील का पत्थर है। भारत में अंग्रेजी राज अर्थात औपनिवेषिक शासन काल में इस घटना ने साम्राज्य वाद के विस्तार पर विराम लगाया, साथ ही भारत के लिए वे परिस्थितियां पैदा की, जहां से स्वतन्त्रता संग्राम का बीज अंकुरित हुआ जो धीरे–धीरे विकसित होकर न केवल एक वृक्ष बना बल्कि उसे 1947 में स्वतन्त्रता रुपी दिशा भी दी, जिस पर आधुनिक भारत में निर्माण का आधार तैयार हो सका। 1857 से 1947 के नौ दशक केवल घड़ी की सुई के सहारे आगे बढ़ता हुआ समय हीं था, बल्कि त्याग, बलिदान संघर्ष व शहादत की एक लम्बी गाथा है। जिसको हमारे पूर्वजों ने अपने खून वे पसीने से तैयार किया तथा अपने–अपने ढ़ंग से अपना सर्वस्व दांव पर लगा कर हमें यह अवसर दिया कि हम खुले आकाश के नीचे अपनी प्रकृति, संसाधनों, खेत–खलियानों, प्रतिमा, अवसर, अरमान व भावनाओं को संजो सकें एवं एक सम्मानजनक जीवन से सरोबार हो सके। हमारे पूर्वजों का संघर्ष हमें स्वतन्त्रता दे गया एवं अपनी विरासत से भी हमें अवगत करा गया। इसकी महत्ता इस बात में भी है कि उन्होंने विश्व की सबसे शक्तिशाली साम्राज्यवादी ताकत को टक्कर दी, जिसके राज्य से कभी सूर्य अस्त नहीं होता था। भारत में अंग्रेजी सत्ता को प्रारम्भ से ही स्वीकार नहीं किया गया था बल्कि अलग–अलग क्षेत्रों मे अलग–अलग लोगों ने अपने–अपने अन्दाज से प्रतिरोध किया। ये प्रतिरोध बहुत सीमित स्तर के थे, फलतः साम्राज्यवादी सता उन्हें चुनौति नहीं मानती थी। इसी कड़ी में पहली बार एक विस्तृत, संगठित, सन्तुलित तथा व्यापक चुनौति 1857 में मिली जो शक्ति, अत्याचार, दमन व अमानवीय साधनों को अपना कर असफल कर दी मई। भले ही ये पूर्वज असफल रहे लेकिन उनकी असफलता में भी वैभव छिपा हैं जो हमें गर्व प्रदान करता है साथ में विरासत, लोक स्मृति तथा ऐतिहासिक प्रक्रिया से सबक लेने का प्रामणिक आधार भी देना हैं।

1857 का अध्ययन राष्ट्रीय राज्य, क्षेत्र तथा व्यक्ति विशेष के सन्दर्भ में करने का प्रयास अवश्य हुआ है लेकिन यह घटना से महत्व के अनुरुप नहीं हो पाया है क्योंकि इस घटना की गहनता जितना अधिक अध्ययन किया जाए, उसके साथ बढ़ती जाती है साथ में इसके आयाम भी ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पक्षों को इस तरह हमारे सामने रखते हैं जिसके कारण इसका क्षितिज फैलता ही जाता इन पस्थितियों में भी ध्यान रखने का पहलू यह है कि हमें उन पूर्वजों के बारें में अध्ययन, करते समय उनकी चिन्तन भावनाओं व संवेदनाओं का ध्यान अवश्य रखें। जिनको आदर्श मानकर उन्होंने शहादत दी। उनकी शहादत में धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्र, लिंग, गांव–बहर व अगीर–गरीब इत्यादि का अन्तर नहीं था। इन संर्कीणताओं को बाद की पीढ़ी ने अपने स्वार्थ व जरूरतों के अनुरुप विकसित कर लिया।

1887 के जन–विद्रोह में लगभग पांच लाख लोगों ने शहादत दी जिनमें से कुछ के ही नाम सामने आ पाए, बाकि सभी नींव की ईट की भांति अतीत के गर्त में गौण हो गए, फलतः इतिहास के पन्नों तक पहुंचना सम्भव नहीं हो पाया। जो कुछ पहुंचे भी उनके साथ व्यवस्था ने न्याय नहीं किया, बल्कि उपरी तौर पर कुछ पक्ष उठाकर मात्र औपचारिक्ता पूरी हुई प्रतीत होती है। यह बात 1557 के संदर्भ में हरियाणा की भूमिका के बारे में पूरी तरह लागू होती है। यह केवल इतिहासिक घटना के महत्व को कम करना नहीं हैं बल्कि इसके नायको के गौरवपूर्ण त्याग, आत्मबलिदान, संघर्ष व आत्मसम्मान को उचित रुप में सम्मान न देना भी है। इन्हीं नायकों में एक नाम राजा नाहर सिंह का भी है। जो बल्लमगढ़ के शासक थे।

बल्लभगढ़ की रियासत दिल्ली के दक्षिण में 21 मील की दूरी पर स्थित थी। 1857 की क्रांति के समय इसका क्षेत्रफल 190 वर्ग मील तथा जनसंख्या 57000 थी। ओरंगजेब के काल में जाटों के विद्रोह के समय भी यह क्षेत्र सक्रिय था। उत्तर मुगलकाल में यह क्षेत्र विभिन्न जागीरदारों के पास रहा, लेकिन स्थानीय मुखिया की भूमिका अलावतपुर वासी गोपाल सिंह जाट के वंशज निभा रहे थे! गोपाल सिंह के बाद उसका बेटा चरणदास 1714 ई० में तथा उसके बाद 1721 में चरणदास का बेटा बलराम उर्फ बल्लू तेवतिया जाट मुखिया बना। 1725 में उसने सिही के पास एक गढ़ी आबाद की जिसे बलरामगढ़ का नाम दिया गया। यह स्थान आगे चलकर बल्लमगढ़ के नाम से विख्यात हुआ।

बल्लभगढ़ के भरतपुर के साथ प्रारम्भ से अच्छे संबंध रहे थे, परन्तु बाद में इनमें टकराव आ गया था। बलराम की

जाट राजा सूरजमल से दोस्ती कराने में महत्वपूर्ण भूमिका एक मराठा वकील की रही। उसके बाद यह जीवन पर्यन्त बनी रही। बलराम की धोखे से मृत्यु के बाद यह क्षेत्र अव्यवस्था का केन्द्र बना। भरतपुर रियासत के सहयोग से बलराम के पुत्रों किशन सिंह, बिशन सिंह व रामसेवक ने स्थिति को संभाला, लेकिन अहमदशाह अब्दाली के 1755 ई. के आक्रमण ने स्थिति को नाजुक बना दिया। 1776 ई. में किशन सिंह का पुत्र अजीत सिंह मुखिया बना। उसने 60,000 रुपए भरतपुर के राजा नवलसिंह को देने के लिए आनुवंध पर हस्ताक्षर किए। 1793 ई. में अजीत सिंह को उसके भाई जालिम सिंह ने कत्ल कर दिया, परन्तु वह फिर भी सत्ता नहीं ले सका। स्थानीय जनता, मुगल दरबार के सामंतों तथा भरतपुर के शासक की मदद से अजीत सिंह का पुत्र बहादुर सिंह शासक बना। 1803 ई. में अंग्रेजों के दिल्ली पर अधिकार करने के बाद उन्होंने बहादुर सिंह से पाली व पाखल के परगने ले लिए तथा दिल्ली–मथुरा मार्ग की राहदारी वसूलने का अधिकार दे दिया। 1829 में रायसिंह का 8 वर्षीय पुत्र नाहर सिंह शासक बना। उसकी संरक्षक उसकी माता देवकंवर रही। उसने अपने दो विश्वासपात्र अधिकारियों अभयराम व पृथ्वी सिंह की सहायता से शासन चलाया। 1842 में नाहर सिंह को बालिग घोषित करते हुए उसकी माता देवकुवर तथा अंग्रेज रेजिडेंट लार्ड ऐलन बरों ने उसे शासन संबंधित निर्णय लेने का अधिकार दे दिया। इसके बाद उसने अपने मामा नवलसिंह को अपना मुख्य सलाहकार बनाया तथा उसने प्रशासनिक नोट पर हिन्दू–मुस्लिम जनता के लिये समान रुप से कार्य किए।

1805 से पहले के रियासत में शामिल गांवों को प्राप्त करना चाहता था। दूसरी और अंग्रेजों की लगान नीति से भी यह असंतुष्ट था क्योंकि लगान की दर अधिक थी तथा तरीका कठोर था।

11 मई 1857 की घटनाओं के बाद जिस तरह दिल्ली की स्थितियां बदल रही थी, उसके भविष्य को लेकर अंग्रेज, प्रजा व स्थानीय रियासतों के शासक स्पष्ट नहीं थे। दिल्ली की वास्तविक स्थिति क्या है। इसलिए नाहर सिंह ने स्थिति का आंकलन करने के लिए दोनों पक्षों के साथ बराबर संबंध बनाये रखे। उसने सर्वप्रथम दावरबख्स के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी बहादुर शाह जफर की सहायता के लिए भेजी। उसने शाही दरबार में अपना स्थायी प्रतिनिधि भेजकर बादशाह को हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया। 24 मई, 1857 तक नाहर सिंह ने लगभग अपने आसपास व अन्य अंग्रेज अधिकारियों को पत्र लिखे।

इसके बाद नाहर सिंह का पक्ष बदल गया। उसने अंग्रेजों के प्रति हर तरह का सहयोग व उदारता का रास्ता बदल दिया। उसके इस कदम के कारण बल्लमगढ़ के बीच से गुजरने वाला दिल्ली–आगरा मार्ग अवरुद्ध हों गया। मेव नेता बदरुद्दीन उसके लगातार सम्पर्क में था। जून–अगस्त, 1857 के अंग्रेजी पत्राचार तथा दस्तावेजों पर नजर डालें तो स्पष्ट होता है कि आगरा की ओर से उनका दिल्ली में प्रवेश संभव नहीं था, क्योंकि नाहर सिंह ने यहां मोर्चा लगा कर रास्ता बन्द कर दिया था व नाहर सिंह ने स्थानीय जाट, मेव, पठान व गुर्जरो की सहायता से पलवल, होडल व फतेहपुर के परगनों पर कब्जा कर लिया। इसके कारण अंग्रेजों ने दिल्ली–आगरा मार्ग असुरक्षित मार्ग घोषित कर दिया तथा अंग्रेजों के दिल्ली मोर्चे की तैयारी आगरा से मेरठ व सहारनपुर होते हुए आगे बढ़ाई।

20 सितम्बर, 1857 को दिल्ली पर अधिकार के बाद अंग्रेजों द्वारा क्रांति में शामिल प्रमुख लोगों की सूची बनाई गई। उनमें राजा नाहर सिंह का नाम अति खतरनाक बागियों में था। बिंगेडियर बाठर्ज ने 23 सितम्बर को बल्लभगढ़ पर आक्रमण किया, राजा नाहर सिंह ने उसका सामना किया, परन्तु उसकी पराजय हुई तथा उसे गिरतार कर लिया, तत्पश्चात उसके आवास, अस्तबल व किले सहित अन्य स्थानों की तलाशी ली गई। इस दौरान न केवल बल्लभगढ़ के सैनिकों की वर्दियां मिली, बल्कि तीसरी, छठी व 32वीं पैदल सेना बटालियन की वर्दियां भी मिली।

17 दिसंबर को झज्जर के नवाब अब्दुर रहमान खान का मुकदमा पूरा हो चुका था। वहीं न्यायालय, वहीं लोग तथा उसी प्रक्रिया के तहत कानूनी कार्यवाही प्रारम्भ की गई व इस विशेष न्यायालय का अध्यक्ष भी चैम्बरलेन था आरोप पत्र भी सी.बी, सांडर्स ने तैयार किया। सांडर्स ने नाहर सिंह पर मुकदमा भी उसी धारा विशेष सेना न्यायालय की धारा XVI के तहत चलाने की सिफारिश की।

23 सितम्बर, 1857 से 8 दिसम्बर, 1857 तक राजा नाहर सिंह को चांदनी चौंक कोतवाली में बंदी मनाया गया जहां पर एक बार फिर सी.बी. सांडर्स ने उससे औपचारिक बातचीत की ताकि आरोप पत्र में विभिन्न अन्य पक्षों को शामिल किया जा सके। 6 दिसम्बर को उसे लाल किले के अस्तबल क्षेत्र स्थित अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया तथा 19 दिसम्बर, 1857 को दोनों हाथों व पांवों में हथकड़ी वे बेड़ियां डालकर लाल किले के दिवान–ए–आम में पेश किया गया। राजा नाहर सिंह का वकील आर.एम. कोर्टिनी था।

राजा नाहर सिंह 10 मई 1857 से 1 दिसंबर 1857 के बीच सरकार विरोधियों तथा सशस्त्र विद्रोहियों के साथ

देशद्रोहपूर्ण पत्राचार किया उसने विद्रोहियों को भड़काया तथा उनकी धन, रसद व हथियार से सहायता की।

उसने अनाधिकृत रुप से सैनिक भेजकर पलवल के परगने पर अधिकार किया जो अंग्रेजी नियंत्रण में था।

उसने अंग्रेजों व बल्लभगढ़ के शासक के बीच हुई 1805 की संधि का उल्लंघन किया तथा अंग्रेजों की स्वामी भक्ति छोड़कर उनसे युद्द लड़ने का संगीन जुर्म किया है।

न्यायालय ने विभिन्न पक्षों को सुनने के बाद 2 जनवरी, 1858 को अपना फैसला दे दिया जिसमें नाहर सिंह को उन पर लगे सभी आरोपों का दोशी माना गया तथा उन्हें मृत्यु दंड सुना दिया।

2 जनवरी 1858 कोर्ट की कार्यवाही इस प्रकार रही– सरकारी वकील ने राजा नाहर सिंह द्वारा अपने बचाव में जो गवाहियां व पत्र पेश किए उनको सारहीन बताते हुए कहा कि जो गवाह राजा नाहर सिंह ने पेश किए हैं, उनसे और उनके द्वारा सचिव गवर्नर जनरल, कमांडिंग–इन–चीफ व लैटीनैंट गर्वनर आगरा को लिखे गए पत्र एक बनावट के आधार पर लिखें गए हैं ताकि अगर ब्रिटिश सरकार विद्रोह को दबाने में सफल हो जाए तो वह अपना बचाव कर सके। मौखिक गवाहियां देने वालों के बयानों से भी यही साबित होता है कि राजा नाहर सिंह ने उनकी सहायता व्यक्तिगत सम्बन्ध होने के कारण की है और राजा सरकार द्वारा लगाए गए आरोपों से मुक्त हो जाये, ऐसा कोई सबूत नहीं दे सके व राजा नाहर सिंह ने विद्रोहियों को सहायता देने और ब्रिटिश इलाके पर अवैध कब्जा करके ब्रिटिश वफादारी तोड़ दी इसलिए वह इन आरोपों के लिए दोषी हैं।

राजा नाहर सिंह को दिल्ली के चांदनी चौक में 9 जनवरी, 1858 को (उसी दिन उनका जन्मदिन भी था) फांसी दे दी गई। कोर्ट के रिकार्ड में इस बारे में जानकारी इस तरह दी गई है।

9 जनवरी 1858 के दिन, चांदनी चौंक कोतवाली के सामने दो लम्बी–लम्बी लकड़ी की बल्लियां गड़ी हुई थीं जिनके ऊपर एक लकड़ी की बल्ली बंधी हुई थी उसके बीच मैं एक लम्बी रस्सी का फंदा लटक रहा था। फंदे से 7–8 फुट नीचे एक तख्ता था जिसके साथ एक तरफ लोहे को हैंडल लगा था, जिसके खींचने से तख्ता जगीन पर गिर जाए। चांदनी चौंक के चारों तरफ ब्रिट्रिश सैनिक भारी संख्या में तैनात थे। चारों तरफ के रास्ते बंद कर रखे थे। घुड़सवार सैनिक भी नंगी तलवारें लिए घूम रहे थे। इस समय वातावरण शून्य सा मालूम होता था। किसी के बोलने आवाज तक नहीं सुनाई देती थी। अंग्रेज सैनिकों से बहुत दूर पीछे मकानों की छत्तों पर भारतीय घूर–घूर कर यह घटना देख रहे थे, लेकिन किसी की जुबान से कुछ कहने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

ठीक 5 बजे लाल किले का मुख्य द्वार खुलते ही कूछ अंग्रेज सैनिक व उच्च अधिकारी लाल किले के अन्दर दाखिल हुए। किले की घुड़साल, जहां मुगल सम्राटों के घोड़े बंधते थे, वहां पर राजा नाहर सिंह कोठरी में बन्द थे। अंग्रेज अधिकारियों के वहां पहुंचने पर राजा नाहर सिंह को कोठरी से बाहर लाया गया। लाल किले का मुख्य द्वार जैसे ही खुला, दो घुड़सवार अंग्रेज सारजैंट आगे आगे चल रहे थे और उसके पीछे राजा नाहर सिंह जिसके सिर पर काला टोप पहना रखा था और उसके दोनों हाथ पीछे बंधे हुए थे। एक सारजैंट हथकड़ी पकड़े हुए था और राजा नाहर सिंह की दोनों बाहें दो अंग्रेज सारजैंटों ने पकड़ रखी थी। वे आहिस्ता–आहिस्ता कोत्तवाली चौंक की तरफ बढ़ रहे थे। कुछ देर बाद वे फांसी पर चढ़ने वाले राजा नाहर को लेकर चांदनी चौंक बाजार के कोतकाली चौंक पर पहुंच गए और उन्हें फांसी के तख्ते पर खड़ा करके गले से टोप निकाल दिया गया और रस्सी का फंदा गले में डालने के बाद एक अंग्रेज उच्च अधिकारी ने राजा नाहर सिंह के सामने खड़ा होकर कुछ पढ़कर सुनाया और उसके रुमाल से इशारा करते ही जल्लाद ने हैंडल खींचा। तख्ता धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा और राजा नाहर सिंह का शरीर नीचे लटक गया और इसके बाद जल्लाद ने उसके पांव कई बार खींचे ताकि जिन्दा न रह जाए। थोड़ी देर बाद मद को उतार कर एक घोड़ा गाड़ी में रख कर दाह संस्कार के लिए किसी अनजान जगह ले जाया गया।

राजा नाहर सिंह को फांसी के बाद उनकी सारी सम्पति जब्त कर ली। परिवार के खर्चे के लिए अलग–अलग सदस्यों के लिये 2289 रुपए, 650 रुपए तथा 383 रुपए वार्षिक पैशन रखकर बल्लमगढ़ से सिही भेज दिया। उसके भाई को भी 2200 बीघे जमीन गांव सिही में दी गई तथा बल्लभगढ़ रियासत के 28 गांवो के साथ आसपास के अन्य गांवों को मिलाकर स्कीनर को दे दी। इस तरह बल्लभगढ़ इसके बाद स्कीनर स्टेट का मुख्यालय बन गया।

पत्रिका के अनुसार ब्रिटिश न्यायालय कानूनी प्रक्रिया का एक ढोंग करता था तथा उसके बाद पहले से निधारित फैसले को सुना दिया जाता और मृत्यु दंड देने में यह प्रक्रिया प्रयोग में लाई जाती थी।

चौधरीसेठछाज्जूराम लाम्बा को उनकी जयंती पर समस्त जाट समाज की ओर से शत शत नमन

– बी.एस. गिल

चौधरी सेठ छाज्जूराम लाम्बा नही होते तो
हमारे बीच चौधरी सर छोटूराम जी जैसा विरला ना होता।।

भूमिका

कुछ लोग इतिहास लिखते हैं, कुछ इतिहास बनाते हैं और कुछ लोग स्वंय इतिहास बन जाते हैं। समय का चक्र हमेशा अविरल गति से घूमता रहता है। युग बदलते हैं, तारीखें बदलती हैं और इसके साथ ही बदल जाता है मानव का दृष्टिकोण। लेकिन कुछ विरले लोग ऐसे भी होते हैं, जो एक युगपुरुष के रूप में याद किये जाते हैं क्योंकि युगों–युगों तक आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरणा पाती हैं। जो खुले आसमान में किसी आकाशदीप की तरह सदा जगमगाते रहते हैं और पूरे संसार को अपनी आभा से आलोकित करते हैं।

एक ऐसे ही युगपुरुष थे चौधरी सेठ छाजूराम लाम्बा, जिन्हें एक और भामाशाह/क्षत्रियों का भामाशाह कहा जाता है। फर्श से उठकर अर्श तक पहुँचने वाला यह महामानव जहां दानवीरता के क्षेत्र में सूरज–चाँद की तरह जगमगाया, वहीं दुखी मानवता के आँसू पोंछने के लिए इसने अपना सर्वस्व अर्पित करने से भी परहेज नहीं किया।

भामाशाहों के भामाशाह दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम

चौधरी छोटूराम के धर्म पिता तुम, उनका फरिश्ता–ए–रोशनाई थे, हरियाणा के तीन लालों की तरह, इसके तीन रामों के रहनुमाई थे। भामाशाहों के भामाशाह दानवीरसेठ छाजूराम, आप गजब शाही थे, जब उदय हो चले अलखपुरा से, जा छाये आसमान–ए–कलकत्ताई थे।। जी. डी. बिड़ला, लाला लाजपतराय रहे किरायेदार, जो इन्सां जुनुनाई थे, कलकत्ते के सबसे बड़े शेयरहोल्डर आप, साहूकारों के अगवाही थे। भगत सिंह को मिली पनाह जिनके यहाँ, वो खुदा–ए–रहबराई थे, नेताजी सुभाष को दी आर्थिक सहायता, जर्मनी की राह लगाई थे।।

दानवीरता की टंकार हुई ऐसी कई भामाशाह अकेले में समाई थे, बाढ़–अकाल–बीमारी–लाचारी–गरीबी में दिए जनता बीच दिखाई थे। लाहौर से कलकत्ता तक, शिक्षा के मंदिरों की दिए लाइन लगाई थे, कौम का इतिहास लिखवाया कानूनगो से, गजब आशिक–ए–कौमाई थे।

तेरे जूनून–ए–इंसानी–भलाई का, यह फुल्ले भगत हुआ दीवाना, वो जज्बा तो बता दे, जो धार दुःख देश–कौम के मिटा पाई रे? सेठों–के–सेठ ओ भारत–देश की शान, किसके दूध की अंगड़ाई थे? जिंदगी राह लग जाए, तुझसे रोशनी ऐसी पाई ओ दादी माई के। 'हरियाणा में तीन लालों की तरह तीन राम भी हुए थे, जिनमें से एक थेरू देश के महान परोपकारी सेठ, शिक्षित, समाज सेवक, दानवीर, देशभक्त चौधरी छाज्जूराम हरियाणा में ही नहीं, बल्कि भारतवर्ष में भी अपनी एक विशेष पहचान रखते है। जहाँ आधुनिक हरियाणा में तीन लाल (देवीलाल, बंसीलाल, भजनलाल) हुए और हरियाणा एवं देश को एक नई राह दिखाईय वहीं एक समय ऐसा भी था जब तीन राम (छाज्जूराम, छोटूराम, नेकीराम) जैसे महान पुरुषों ने समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, वो भी उस समय जब लोगो को कोई भी आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी या यूँ कह लीजिये कि उनकी आशाओं का सूरज पूरी तरह से अस्त हो चुका था। इस अंधकारमयी समाज में उजाला लाने एवं अंधकार को दूर करने और लोगो में नई तरह की आश जगाने का काम इन तीन महापुरुषों ने किया। और ऐसी भूमिका निभाने वाले इन तीनों में से एक और सबसे अग्रणी थे श्रद्धेय चौधरी सेठ छाजूराम जी। इन्होने जो योगदान समाज में दिया उसी का अमिट योगदान है कि आज हम एक स्वच्छ वातावरण में रह रहे है।

सेठ छाज्जूराम का जन्म 27 नवंबर 1865 (अधिकतर जगह 1861 लिखा हुआ है, जबकि हमारे विश्वसनीय शोधकर्ता 1865 बताते हैं) को आधुनिक जिला भिवानी, तहसील बवानीखेड़ा के अलखपुरा गाँव में लाम्बा गोत्र के जाट कुल परिवार में चौधरी सालिगराम जी के यहां हुआ। इनका बचपन अभावों, संघर्षों, और विपत्तियों में व्यतीत हुआ, लेकिन अपनी लगन, परिश्रम और दृढ़ निश्चय से सफलता के शिखर तक पहुंचे। इनके पिता सालिगराम जी एक साधारण किसान थे। चौधरी छाज्जूराम के पूर्वज झुंझनू (राजस्थान) के निकटवर्ती गाँव लाम्बा गोठड़ा से आकर भिवानी जिले के ढाणी माहू गाँव में बस थे। इनके दादा मनीराम ढाणी माहू को छोड़ कर सिरसा जा बसे। लेकिन कुछ दिनों के बाद इनके पिता जी चौधरी सालिगराम अलखपुरा आकर बस गए (याद रहे इस समय गाँव अलखपुरा, हांसी जागीर में आता था और इस समय हांसी जागीर जेम्स स्किनर के बेटे अलेक्जेंडर को दे दी गयी थी। इसी के नाम पर गाँव का नाम अलेक्सपुरा पड़ा, गाँव वालों ने मौखिक रूप में फिर इसको अलखपुरा कहा तो, गाँव का नाम अलखपुरा पड़ा)।

चौधरी का प्रथम विवाह बचपन में सांगवान खाप के हरिया डोहका गाँव में कड़वासरा खंडन की दाखांदेवी के साथ हुआ था। लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही इनकी पत्नी का हैजे की बीमारी से देहांत हो गया। आपका दूसरा विवाह वर्ष 1890 (कुछ प्रारूपों में यह वर्ष 1900 भी बताया गया है।) में भिवानी जिले के ही बिलावल गाँव में रांगी गोत्र की दाखांदेवी नाम की ही लड़की

से हुआ। लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर लक्ष्मीदेवी रख दिया गया। माता लक्ष्मी देवी एक नेक, पतिव्रता व संस्कारित स्त्री थी। कालांतर में उन्होंने आठ संतानों को जन्म दिया, जिनमें पांच पुत्र व तीन पुत्रियां हुई, लेकिन चार संतानें बाल्यावस्था में ही ईश्वर को प्यारी हो गई। बड़े बेटे सज्जन कुमार का युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। अन्य दो बेटे महेंद्र कुमार व प्रद्युमन थे। इनकी बेटी सावित्री देवी थी जो मेरठ निवासी डॉ. नौनिहाल से ब्याही गई थी।

सेठ छाज्जूराम की शिक्षा में बचपन से ही रूचि रही इसी रूचि को लेकर आर्थिक स्थिति अच्छी न रहने के बावजूद भी अपनी प्रारम्भिक शिक्षा (1877) बवानीखेड़ा के स्कूल से प्राप्त की। चौधरी साहब गाँव से ग्यारह किलोमीटर दूर बवानीखेड़ा के प्राइमरी स्कूल में पैदल पढ़ने जाते थे। परन्तु जैसा कि होनहार बिरवान के होत चिकने पात, ऐसे ही आपने रोज की इतना पैदल चलने की चुनौती को पार किया अपितु जब पांचवीं कक्षा का बोर्ड का परिणाम आया तो न केवल अपनी परीक्षा में प्रथम अपितु प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। मिडल शिक्षा (1880) भिवानी से पास करने के बाद उन्होंने रेवाड़ी से मैट्रिक की परीक्षा (1882) में पास की। मेधावी छात्र होने के कारण इनको छात्रवृतियां भी मिलती रही लेकिन परिवार की स्तिथि अच्छी न होने के कारण आगे की पढ़ाई न कर पाये।

आपने मैट्रिक संस्कृत, अंग्रेजी, महाजनी, हिंदी, उर्दू और गणित विषयों से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। इस दौरान अपनी पढाई और स्वंय का खर्च चलाने हेतु आप दूसरे बच्चों को ट्यूशन भी देते रहे। धन अभाव के कारण एक बंगाली इंजीनियर एस. अन. रॉय के बच्चों को एक रूपये प्रति माह के हिसाब से ट्यूशन पढ़ाने लग गए। जब रॉय साहब कलकत्ता चले गए तो छाज्जूराम को भी उन्होंने कलकत्ता बुला लिया। पैसे के अभाव में वो कलकत्ता नहीं जा सकते थे, लेकिन फिर भी जैसे–तैसे करके उन्होंने किराये का जुगाड़ किया और कलकत्ता चले गए। उन्होंने वहां भी उसी प्रकार बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। यहाँ पर उनको छः रु० प्रति माह मिलते थे। लेकिन यहां कड़ा संघर्ष यहां आपका इंतजार कर रहा था। नए लोग, नए–नए काम, न रहने का ठिकाना, न खाने का पता। तंग आकर घर वापिस जाने का फैसला किया, लेकिन फिर किराए की समस्या सामने आ गई। व फूट–फूट कर रो पड़े और मन को मारकर मूलरूप से भिवानी निवासी रायबहादुर नरसिंह दास से मुलाकात की तथा घर जाने के लिए किराया उधार माँगा। नरसिंह दास ने उन्हें हौंसला दिया और कलकत्ता में ही रहकर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि कलकत्ता ऐसा शहर है, जहाँ न जाने कितने ही लोग खाली हाथ आये और अपनी मेहनत और संघर्ष की बदौलत बादशाह बन गए। और इस तरह शुरू हुआ सफर उनको उनके जमाने के देश के सबसे बड़े रहीशों में शामिल हो गया।

अब आपका सम्पर्क मारवाड़ी सेठों से हुआ, जिन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान कम था लेकिन छाज्जूराम को अंग्रेजी भाषा का व्यापक ज्ञान था तो आपने पत्र लिखने और भेजने का काम छाज्जूराम ने शुरू कर दिया, जिस पर सेठों ने इनको मेहनताना देना शुरू कर दिया। इसी दौरान देखते ही देखते व्यापारी–पत्र–व्यवहार के कारण इनको व्यापार का ज्ञान हो गया एवं व्यापार सम्बन्धी कुछ गुर भी सीख लिए जिसके कारण उनको इन्हीं गुरो ने महान व्यापारी बना दिया। कुछ समय बाद आपने बारदाना (पुरानी बोरियों) का व्यापार शुरू कर दिया। यही व्यापार उनके लिए वरदान साबित हुआ और उनको 'जूट–किंग' (हेसियन का राजा) बना दिया। धीरे–धीरे कलकत्ता में उन्होंने शेयर भी खरीदने शुरू कर दिए। एक समय आया जब वो कलकत्ता की 24 बड़ी विदेशी कम्पनियो के शेयरहोल्डर थे और कुछ समय बाद 12 कम्पनियो के निदेशक भी बन गए, उस समय इन कम्पनियो से 16 लाख रूपये प्रति माह लाभांश प्राप्त हो रहा था। और सेठ जी उस जमाने के कलकत्ता के सबसे बड़े शेयरहोल्डर थे।

इसीलिए पंजाब नेशनल बैंक ने उनको अपना निदेशक रख लिया लेकिन काम की अधिकता होने के कारण उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। एक समय आया जब उनकी सम्पति 40 मिलियन को पार कर गयी थी। एक समय था जब छाज्जूराम के पास एक छतरी को खघ्रीदने के लिए पैसे नहीं थे परन्तु अब उनकी गिनती देश के शिखर के सेठो में की जाने लगी थी। आपने 21 कोठी कलकत्ता में (14 अलीपुर, 7 बारा बाजार) में बनवायी। जी. डी. बिरला व पंजाब केशरी लाला लाजपतराय भी चौधरी छाज्जूराम जी के किरायेदार रहे। आपने एक महलनुमा कोठी अलखपुरा में व एक शेखपुरा (हांसी) में बनवायी। आपने हरियाणा के पांच गाँव भी खरीदे तथा भिवानी, हिसार और बवानीखेड़ा के शेखपुरा, अलीपुरा, अलखपुरा, कुम्हारों की ढाणी, कागसर, जामणी, खांडाखेड़ी व मोठ आदि गाँवों 1600 बीघा जमीन भी खरीदी। आपके पंजाब के खन्ना में रुई तथा मुगफली के तेल निकलवाने के कारखाने भी थे। उस जमाने में रोल्स–रॉयस कार केवल कुछ राजाओं के पास होती थी, लेकिन यह कार आपके बड़े बेटे सज्जन कुमार के पास भी थी।

जूट किंग बनने एक बाद तो चौधरी साहब की हर जगह धूम मची, वो जिस भी कारोबार में हाथ डालते, वही चल निकलता। लेकिन इस सफलता दरम्यान आपने जिंदगी का जातिपाती और नश्लभेद का भी दंश झेलना पड़ा। क्योंकि अनेक व्यापारी उनकी जाति के कारण उनसे दोयम दर्जे का व्यवहार करते थे। एक ब्राह्मण ने तो उन्हें अपने ढाबे पे खाना खिलाने से ही इंकार कर दिया। वे समझते थे कि व्यापार पर महाजनों का अधिकार है। एक जाट क्षत्री युवक व्यापार पर कब्जा करे, यह उनसे सहन नहीं होता था। उन्होंने चौधरी छाजूराम को असफल करने के अनेक कुचक्र रचे, लेकिन असफल रहे।

इतना बड़ा कारोबार और धन–धान्य का साम्राज्य खड़ा होने पर भी, क्या मजाल जो चौधरी साहब को घमंड छू के भी निकल सका हो। उन्होंने इस धन से जनकल्याण के काम करवाने शुरू कर दिए। उन्होंने जगह–जगह शिक्षण संस्थाएं खुलवाई, पानी के लिए कुँए और बावड़ियां खुलवाई, पथिकों और यात्रियों के लिए धर्मशालाओं

आदि का निर्माण करवाया। उनका कहना था। मैं जितना दान देता हूँ, ईश्वर मुझे ब्याज सहित लौटा देता है। उनके दान की राशि और लिस्ट बहुत लम्बी है। देश की अधिकांश शिक्षण संस्थाओं को उन्होंने जहाँ जी खोलकर दान दिया, वहीं उन द्वारा बनाई गई अनेक इमारतें और भवन आज भी उनकी दानवीरता के स्तंभ बने खड़े हैं।

रहबरे–आजम चौधरी छोटूराम के वो धर्म–पिता थे। आपने रोहतक में चौ. छोटूराम के लिए नीली कोठी का निर्माण भी करवाया (याद रहे चौ. छोटूराम जी को उच्च शिक्षा का खर्च वहन करने वाले चौ. छाज्जूराम ही थे)। कहा जाता है कि अगर चौ. छाज्जूराम जी नहीं होते तो चौ. छोटूराम जी भी नहीं होते और अगर चौ. छोटूराम नहीं होते तो किसानो के पास आज भूमि नहीं होती।

सेठ छाज्जूराम की दानदक्षता उस समय भारत में अग्रणीय थी। कलकत्ता में रविंद्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन से लेकर लाहौर के डी. ए. वी. कॉलेज तक कोई ऐसी संस्था नहीं थी, जहाँ पर उन्होंने दान न दिया हो। सेठ साहब ने शिक्षा के लिए लाखों रूपये के दान दिए, फिर वह चाहे हिन्दू विश्वविधालय बनारस हो, गुरुकुल कांगड़ी हो, हिसार–रोहतक (हरियाणा) व संगरिया (राजस्थान) की जाट संस्थाए हों, हिसार और कलकत्ता की आर्य कन्या पाठशालाएं हों, हिसार का डी ए वी स्कूल हो अथवा अलखपुरा और खांडा खेड़ी के ग्रामीण स्कूल, हर जगह अपार दान दिया। इसके अलावा इंद्रप्रस्थ महिला महावि।ालय दिल्ली, डी ए वी कॉलेज लाहौर, शांति निकेतन, विश्व भारती में भी बार–बार दान दिए। आपने गरीब, असमर्थ व होनहार बच्चों के लिए स्कालरशिप प्लान निकाले, जिसके तहत वो सैंकड़ों बच्चों की शिक्षा स्पांसर करते थे।

सन 1928–29 के अकालों में, 1908–09 में प्लेग और 1918 के इन्फ्लुएन्जा की महामारियों में, 1914 की दामोदर घाटी की भयंकर बाढ़ में दोनों हाथों से धन लुटाकर मानवता को महाविनाश से बचाया। उन्होंने भिवानी में अनेक परोपकारी कार्य किये उन्होंने 'लेडी–हेली' नामक हस्पताल का निर्माण पांच लाख रूपये से अपनी बेटी कमला की याद में (1928) करवाय (आज उसी जगह पर आज चौ. बंसीलाल हस्पताल है)। भिवानी में उन्होंने एक अनाथालय बनवाया, यहीं पर उन्होंने एक गौशाला का निर्माण भी करवाया। अलखपुरा में उन्होंने कुए एवं धर्मशाला भी बनवाई। वे विशुद्ध आर्य समाजी थे इसलिए उन्होंने आर्य समाज मंदिर कलकत्ता के बनवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चौधरी छाजूराम ने जाट इतिहास के विख्यात लेखक कलिका रंजन कानूनगो द्वारा 1925 में लिखे गए जाट इतिहास की खोज व लेखन का खर्च भी खुद वहन किया। जिससे उनका अपनी कौम के प्रति फर्ज, जागरूकता और दूरदर्शिता भरा प्रेम भी जाहिर होता है।

सेठ छाज्जूराम दान–दाता ही नहीं थे बल्कि वो उच्चकोटि के देशभक्त भी थे। उनकी आँखों में भी भारत की आजादी का सपना था। वो भी भारत को आजाद देखना चाहते थे। जब 17 दिसम्बर, 1928 को सरदार भगतसिंह ने अंग्रेज अधिकारी सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी तो वो भाभी दुर्गा व उनके पुत्र को साथ लेकर पुलिस की आँखों में धूल झोंकते हुए रेलगाड़ी से लाहौर से कलकत्ता पहुंचे, और कलकत्ता में वे सेठ छाज्जूराम की कोठी पर पहुंचे और सेठ साहिब की धर्मपत्नी वीरांगना लक्ष्मी देवी जी ने उनका स्वागत किया। यहाँ भगत सिंह लगभग ढ़ाई महीने तक रहे, जिसकी कि उस समय कल्पना करना भी संभव नहीं था, लेकिन सेठ जी के देशप्रेम के कारण यह सम्भव हो पाया। उन्होंने देश की आजादी में सबसे भरी आर्थिक सहयोग दिया। वे कहा करते थे कि देश को आजाद करवाने में चाहे उनकी पूरी सम्पति लग जाए, लेकिन देश आजाद होना चाहिए और अपने हाथों से भोजन बनाकर खिलाया। पंडित मोतीलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी द्वारा मनोनीत कांग्रेस अध्यक्ष सीताभिपट्टाभिमैया सहित न जाने कितने ही नेताओं और क्रांतिकारियों को देश की आजादी के लिए भी चंदा दिया। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जब जर्मनी जा रहे थे तो उन्होंने भी चौधरी छाजूराम जी से आर्थिक सहायता ली थी। सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी चौधरी छाजूराम जी ने एक लम्बी लड़ाई लड़ी। बाल–विवाह व अशिक्षा के वो घोर विरोधी थे।

उनका मन कभी भी राजनीति में नहीं लगा, लेकिन फिर भी चौ. छोटूराम के कहने पर संयुक्त पंजाब में सं 1927 में एम. अल. सी. भी रहे।

चौधरी छाजूराम के बड़े पुत्र सज्जन कुमार बहुत ही होनहार व व्यवहार कुशल थे। वहीं वो चौधरी साहब का व्यापार संभालने में भी माहिर थे, लेकिन 27 सितंबर 1937 को जब उनकी अकस्मात मौत हुई तो इस हादसे ने चौधरी साहब को अंदर से तोड़ दिया। लगता था कि वो वक्त से पहले ही बूढ़े हो गए थे। और फिर 7 अप्रैल 1943 को आप महान आत्मा संसार को छोड़, भगवान के दरबार को प्रस्थान कर गए। माना जाता है कि सेठ जी और उनके पुत्र सज्जन की मृत्यु के पश्चात इतनी विशाल विरासत को कोई नहीं संभाल पाया। मृत्यु और जिस सम्मान के मरणोपरांत हकदार थे, वह उन्हें नहीं मिल पाया।

महान पुरुष, सेठो के सेठ, सर्वश्रेष्ठ दानवीर, गरीबनवाज और पतितो–उद्दारक सेठ छाज्जूराम जी के महाप्रयाण (1943) के अवसर पर दीनबंधु चौ. छोटूराम जी ने कहा था भारत का महान दानवीर, गरीबों व अनाथों का धनवान पिता, तथा मेरे धर्म पिता सेठ छाज्जूराम जी अमर होकर हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए। उनके लिए सच्ची श्रृद्धांजलि यही होगी कि हम सभी उनकी इच्छाओं, आकांक्षाओ के अनुसार दिखाए गए मार्ग पर चलते रहें। इस महान विभूति को हम सदैव याद रखेंगे। चौ. छाज्जूराम के द्वारा किये परोपकारी कार्य, उनके द्वारा बनाई गयी संस्थाएँ वैसे ही खड़ी है और उनके सपने को पूरा कर रही हैं। उनका आज के समाज में बहुमुखी योगदान है। जैसे–जैसे समय बीतता जायेगा वैसे–वैसे उनको मानवतावादी युगपुरुष के रूप में याद किया जायेगा।

हजूर महाराज सावन सिंह

(डेरा बाबा जैमल सिंह के जानशीन नं. 2)

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

डेरे की बुनियाद तो बाबा जैमल सिंह जी महाराज ने रखी, पर वर्तमान डेरे के निर्माता हुजूर महाराज सावन सिंह जी थे। उनके समय में डेरे ने दिन दोगुनी और रात चौगुनी उन्नति की और डेरा एक कच्ची कोठरी से विकसित होकर एक छोटी–सी सुंदर बस्ती बन गया। आज डेरा एक आदर्श कस्बा बन गया है जिस में वर्तमान की सभी सुविधाएं उपलब्ध है।

एक समय था जब पंजाब में संतों की शिक्षा तथा राधास्वामी नाम तक से कोई परिचित न था। आज हर शहर व गाँव में अनेक सत्संगी हैं। पहले लोगों को इस नाम से एतराज था, परंतु अब लोग राधास्वामी मार्ग के अनुयायी कहलाने में गर्व का अनुभव करते हैं। देहधारी गुरु की आवश्यकता को लोग अब महसूस करने लगे हैं। पढ़े–लिखे लोगों में इस रूहानी शिक्षा के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न हो गई है। हर सत्संग में करोंड़ों की संख्या में शिक्षित वर्ग, अध्यापक, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, वकील, रिटार्ड आई.ए.एस., आई.पी.एस. व जज शब्द–अभ्यास की युक्ति सीखकर बड़े शौक और प्रेम से नाम की कमाई में लग रहे हैं। रूहानियत का प्रवाह आ गया है। सत्संगियों के पवित्र जीवन, सदाचार और नेक आचरण ने लोगों के दिलों पर गहरा प्रभाव डाला है और हर जगह सत्संग व रूहानियत की चर्चा होने लगी है। संतमत के आलोचक भी अब इस बात को स्वीकार करते हैं कि सत्संगी शराब नहीं पीते, मांस नहीं खाते, रिश्वत नहीं लेते, ईमानदारी और नम्रता से जीवन बिताते हैं और किसी पशु या पक्षी को भी कष्ट नहीं पहुँचाते। यह सब हुजूर के सत्संगों तथा लंबे और श्रमपूर्ण सत्संग के दौरों का नतीजा है। हुजूर की दया–मेहर से संतमत का प्रकाश संसार के कोने–कोने में पहुँच गया है और डेरा आज विश्व में रूहानियत का एक अनुपम केंद्र बन गया है। राधा स्वामी संत्सग से आज करोंड़ों लोग जुड़े हुए है। जो भजन सिमरन करके अपना लोक–परलोक के साथ मुक्ति का रास्ता अपना रहे है। जो बाद में परमात्मा में समाने की युक्ति अपनाये हुए है।

हुजूर बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि और परिश्रमी थे। सदा अपनी कक्षा में प्रथम रहते थे। अपने अध्यापकों का पिता के समान आदर करते। शिक्षा पूरी करने के बाद नौकरी के दिनों में भी आप पुराने अध्यापकों को समय–समय पर कोई न कोई भेंट भेजते रहते। आपके एक अध्यापक पंडित दौलत राम हुजूर के रिटायर होने के बाद भी डेरे में कई बार आपसे आकर मिला करते थे। हुजूर उनका बहुत आदर करते। पंडित जी बताते थे कि हुजुर ऐबटाबाद और मरी पहाड़ से हमेशा उनके लिए गर्म पट्टू के थान भेजा करते थे। पंडित जी कहते कि हम शुरू से ही कहा करते थे कि यह लड़का एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनेगा।

पढ़ाई पूरी करने के बाद कुछ समय घर रहकर हुजूर खेती के कामकाज निगरानी करते रहे। परंतु कुछ ही दिनों बाद आपको पंजाब के सिंचाई विभाग में नौकरी मिल गई और आप रोहतक जिले में गोहाना नहर पर एक साल तक जिलेदार के पद पर कार्य करते रहे।

सरकारी नौकरी से लौटकर तंदुरुस्त होने के बाद हुजूर पंजाब पलटन नंबर 14 में भर्ती हो गए। चार–पाँच महीने की सैनिक शिक्षा के बाद कर्नल साहिब ने आपको सेना के अफसरों को पढ़ाने का कार्य दे दिया। परंतु कुछ समय बाद अंग्रेज अफसरों की सलाह पर आपथॉमसन कॉलेज रुड़की में ओवरसीयर की क्लास में पलटन की ओर से दाखलि हो गए। थॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज रुड़की में हुजूर हर विषय में बहुत अच्छे नंबरों से पास होते रहे।

1884 में रुड़की कॉलेज से बहुत अच्छे नंबरों से पास होकर हुजूर अपनी पलटन में वापस आ गए और आपकी बदली मिलिटरी इंजीनियरिंग सर्विस (एम. ई. एस.) में कर दी गई। अपनी नौकरी का ज्यादा हिस्सा (अर्थात् 18 वर्ष) आपने कोहमरी, ऐबटाबाद, नथियागली, चराट, काला बाग आदि पहाड़ी स्थानों में बिताया।

जहां भी कोई मुश्किल काम होता वहां हुजूर को भेज दिया जाता। मरी का वाटर वर्क्स (जल–योजना) भी हुजूर की निगरानी में ही बना था।ह्हुजूर फरमाते थे कि उस वक्त सतगुरू द्वीनदयाल की दया–मेहर के प्रति जो भाव मन में आया, वह मेरा दिल ही जानता है। रोम–रोम गुरु का शुक्रगुजार था। दिल करता था कि तन–मन उस गुरु के चरणों में वार दूँ जिसने ऐसे समय में मेरी लाज रखी और रक्षा की।

28 वर्ष बड़ी योग्यता और सफलता के साथ नौकरी करने के बाद पहली अप्रैल, सन 1911 को हुजूर रिटायर होकर डेरे आ गए।

धीरे–धीरे डेरे का कार्य बढ़ने लगा। संगत भी अपने सतगुरु के दर्शन के लिए व्याकुल होने लगी। इसलिए हुजूर अप्रैल सन 1911 में अपने समय से दो वर्ष पहले रिटायर होकर डेरे आ गए। यहाँ आते ही सत्संग, की सेवा और जिज्ञासुओं से भेंट में सारा दिन व्यस्त रहने लगे। इन सब कार्यों के बाद जितना भी समय मिलता हुजूर उसे भजन में बिताते थे।

हुजूर कभी–कभी फरमाते थे कि मैंने बाबा जी महाराज से तीन–चार वर लिए हैं। पहला तो यह था कि हुजूर के लंगर में कभी कमी न आए। हुजूर ने बाबा जी महाराज से विनती की थी, "मैंने कभी किसी से कुछ माँगा नहीं है। आपका लंगर बराबर चलता रहे और मुझे संगत से कभी यह न कहना पड़े कि आज लंगर में फलाँ चीज की जरूरत है।" इस पर बाबा जी ने फरमाया, "बच्चू ! तुम्हारे लंगर में कभी कोई कमी नहीं आएगी और लंगर कभी न खुटेगा।" और आज तक ऐसा मौका कभी नहीं आया कि लंगर में कभी कोई चीज कम पड़ी हो। हुजूर खुद लंगर के सेवादारों से फरमाया करते थे कि आप लोग संगत को लंगर में

बड़ी खुशी और प्यार के साथ खिलाओ। बाबा जी का भंडार अखुट है, यहाँ कभी कोई कमी नहीं आएगी।

दूसरा वर हुजूर ने माँगा था कि अगर मैं कभी गुस्से में आकर किसी से कुछ कह भी बैठूँ तो उसका नुकसान न हो। तीसरा यह कि मेरी संतान किसी के आगे हाथ न फैलाए। एक बार हुजूर ने बातचीत के दौरान फरमाया कि मैं मालिक का शुक्रगुजार हूँ कि मेरी संतान कमाऊ और लायक है, खुद कमाकर खाती है और साध–संगत की मुत सेवा करती हैं। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती। चौथा वर बाबा जी ने यह दिया था कि जिसको हुजूर महाराज जी नाम बख्शेंगे उसकी पूरी पूरी सँभाल होगी।

जब हुजुर डेरे में आकर रहने लगे तो आपने दो कार्य हाथ में लिए। डेरे का विकास और संतमत का प्रचार। जैसे–जैसे संगत बढ़ने लगी, मकान बनने शुरू हो गए। डेरे के अंदर की सड़कें तैयार होने लगीं और संगत ने सेवा करके स्टेशन से वड़ाइच गाँव से कुछ आगे तक सड़क बना दी। हुजूर ने आसपास के खेत खरीदे और डेरे के विकास का सिलसिला शुरू हो गया। जितने भी मकान, सड़कों आदि का निर्माण उस समय हुआ, सब हुजूर के अपने निरीक्षण और मार्गदर्शन में हुआ। हुजूर खुद कई घंटे बैठकर अपने सामने निर्माण आदि कार्य देखते तथा संगत आपकी उपस्थिति में प्रेम के साथ सेवा करती रहती।

बाबा जी के ज्योति–जोत समाने के बाद शुरू–शुरू में जब भी हुजूर डेरे आते तो सत्संग के बाद पूरा समय भजन में बिताते। बीबी रुक्को आपके अभ्यास का हाल चाचा जी सेठ प्रताप सिंह जी को लिखती रहतीं। चाचा जी ने एक पत्र के उत्तर में बीबी रुकको को लिखा, "बाबू सावन सिंह का भजन का शौक व मेहनत, अभ्यास ऐसा कि चार–चार रोज कोठे से बाहर नहीं निकलते, यह जानकर तबीयत निहायत खुश हुई।" गदूदीनशीनी के बाद हुजूर ने कुछ समय तक नाम की बख्शिस शुरू नहीं की। अभी आपको पेंशन के हकदार बनने के लिए नौकरी के कुछ साल बाकी थे।

हुजूर महाराज सावन सिंह जी ने जो विदेशों में नाम की शुरुआत की और जो बीज बोया, वह आज फल–फूलकर एक विशाल वृक्ष का रूप ले रहा है। इसका पूरा विवरण आगे दिया जाएगा।

डेरे का प्रबंध तथा हुजूर के वसीयतनामे

हुजूर महाराज सावन सिंह जी, के समय में डेरे की बहुत उन्नति हुई तथा डेरे में और बाहर, सत्संग की काफी जायदाद बन गई। हुजूर दीनदयाल ने इस जायदाद तथा डेरे में सेवा में आनेवाली वस्तुओं व रकम का कभी खुद के लिए अथवा अपने परिवार के लिए प्रयोग नहीं किया। रूहानी दृष्टि से और संतमत की परंपरा के अनुसार हुजूर इस सारी संपत्ति के एकमात्र मालिक थे। परंतु उन्होंने इसे हमेशा संगत की अमानत के रूप में रखा, इसकी सँभाल की तथा इसको बढ़ाने और विकास में योगदान दिया। इतना ही नहीं बल्कि हुजूर अपनी निजी कमाई में से रुपया, सामग्री आदि बराबर सत्संग की सेवा में देते रहे तथा स्वयं अपनी सेवा द्वारा तन, मन और धन की सेवा की एक मिसाल पेश की। इन सबको व्यवस्थित तथा कानूनी रूप देने के लिए हुजूर ने समय–समय पर वसीयतें बनाई जिन्हें यहाँ दिया जा रहा है :–

79 वर्ष की आयु में महाराज जी ने 30 नवंबर, 937 को अपनी पहली वसीयत बनाई जिसे उसी दिन रजिस्टर भी करवा दिया गया। इस वसीयत में हुजूर ने अपनी निजी संपत्ति तथा रूहानी संपत्ति का विवरण दिया और अपनी निजी संपत्ति की अपनी संतान के पक्ष में वसीयत करवा दी। अपनी रूहानी संपत्ति के विषय में हुजूर ने लिखा कि इस संपत्ति का उत्तराधिकारी वह व्यक्ति होगा "जिसे मैं एक अलग वसीयत के द्वारा डेरा बाबा जैमल सिंह में अपने स्थान पर जानशीन मुकर्रर करूँगा।" इसके बाद दुसरी वसीयत में महाराज जगत सिंह को डेरे का जानशीन मुकर्रर किया था। महाराज जगत सिंह ने अपने बाद श्री चरण सिंह जी महाराज को जानशीन मुकर्रर किया था। इन्होंने भी डेरे के विकास में काफी योगदान दिया और देश–विदेशों में भी संतमत का काफी प्रचार किया और भारत के मुख्य शहरों में डेरे की तरफ से अस्पताल बनायें गये। जिनमें संगत का मुत ईलाज होता है।

महाराज चरण सिंह ने अपने बाद श्री गुरिन्द्र सिंह ढ़िल्लों को डेरे का जानशीन मुकर्रर किया था। जिन्होंने देश–विदेश में संतमत का प्रचार करते हुये सत्संग घरों का निर्माण भी करवाया। इनकी देखरेख में करोना के दौरान सत्संग घरों में हजारों बैड लगाकर सरकार को सौंप दिये थे। डेरा बाढ़ पीड़ितों तथा भूकम्प आदि से पीड़ित लोगों की मदद के लिये लाखों रुपये की धनराशि देने के साथ–साथ आवश्यक सामग्री व कपड़े आदि भी भेजता रहता है। डेरा एक इंसानियत की जिती–जागती मिशाल है।

Utility of Hydrogen Mission Initiative

- R.N.Malik

Pritam Singh and Simon Pirani, in their article "Hydrogen Mission may undermine climate goals", (Tribune, April 10, 2023) have criticized the initiative of the National Green Hydrogen Mission set up to promote and manufacture 10 million tonnes (mt) of Hydrogen gas per year by the year 2030 . The arguments advanced to support their views are thoroughly unconvincing. For example, they say that manufacturing 10 million tones of Hydrogen gas annually will require 50 billion litres of mineralised water causing water stress besides consuming huge amount of renewable energy. Consumption of 50 billion litres of per year amounts to 60 cusecs (cubic ft per second) flow of canal water which equals only one fourth of the daily water requirement of Gurgaon township and the quantity is not big

enough to cause water stress. Likewise, production of 10 mt of Hydrogen gas annually (50 kwh per kg of hydrogen gas) requires an installed capacity of 35000 MW of solar power covering a land area of 600 sq.kms which again is not a big deal to arrange in Thar desert of Rajasthan or in other agriculturally backward areas.

Fortunately, all developed countries (producers of large amount of CO2 emissions) are seriously look-ing for developing alternative sources of renewable energy because of their commitment to achieve net zero CO2 emissions by 2060 and accordingly are engaged in installing pilot projects for Hydrogen gas manufacturing in order to partly replace the use of fossil fuels in different sectors like transport etc. European countries want to manufacture Hydrogen on a massive scale in Sahara desert (with abundant solar energy availablity) and transport the same to Europe for heating of buildings during winter and other consumptive uses during summers. This super mega project is being envisaged for two primary reasons. Firstly, these countries do not want to depend upon Russian gas for strategic reasons and secondly because of absence of enough clear sky days during 6 months of the winter sea-son. Likewise, Japan has installed three pilot projects in Australian desert to produce Hydrogen gas and transport the same to Japan. So India could not afford to lag behind in this race and has rightly set up the National Green Hydrogen Mission to act as a catalytic agent for promoting the manufac-turing of Hydrogen gas by the private sector by offering a subsidy of Rs.20000 crore to the energy companies.

Green hydrogen is produced by passing an electric current through water with low contents of dis-solved mineral salts with the stipulation that power consumed will be generated from renewable re-sources whereas grey hydrogen is produced by the reaction of natural gas or methane with super-heated steam without the capture of CO2 emissions.

India is the third major producer of CO2 emissions after America and China. This is because India con-sumes 900 mt of coal annually to feed thermal power plants (with a capacity of 2.45 lac MWs) and other uses, imports 30 billion cubic meter of natural gas and consumes 5 million barrels of oil daily (mbpd) to run the transport system of the country. The demand of hydrocarbons is likely to increase immensely in future because of economic growth and rise in population. Therefore, India has to pro-duce huge amount of renewable energy (hydro, solar, wind and hydrogen gas energies) to achieve the net zero target of CO2 emissions (or decarbonise India) by 2060. Presently, India has been able to in-stall one lac MW of solar energy. But it will be able to replace thermal power plants of 16000 MW capacity only because one MW of solar energy generates 4000 units (kwh) per day against 24000 units generated by one MW of thermal power by burning 15 tonnes of coal daily.

There is additional compulsion for India to reduce the consumption of hydrocarbon fuels urgently. It is because that she has to import 85% demand of the crude oil and natural gas from Arab countries and Russia leading to massive rise in the import bill. The skeptics can say why develope Hydrogen gas resource when sufficient scope for developing hydro and solar energy resources exists within the country. There is some merit in this observation. It is a fact that hydrogen fuel cannot be used for re-placing thermal power plants because 30% power is lost in converting renewable energy into Hydro-gen gas energy. But Hydrogen gas can be safely and economically utilised to meet cooking gas re-quirements in order to replace the import of natural gas totally. This substitution will give double benefit I.e. saving in CO2 emissions and lowering the import bill. Hydrogen gas of equal amount near Dahej terminal can be safely and economically transported to different parts of India through the ex-isting pipe network.

Two other uses of hydrogen gas are its use in fertilizer industry and transport sector. Hydrogen gas can be combined with Nitrogen to form Ammonia, the main component of both phosphate and am-moniacal fertilizers. Presently, the fertilizer units use grey hydrogen for the purpose. Use of green hy-drogen is definitely costlier than the grey hydrogen. But the production process of grey Hydrogen gas does not involve capturing of CO2 emissions and consequently, the use of green hydrogen becomes a compulsion rather than the necessity. Therefore the objection of authors of replacing 6 mt of grey Hydrogen annually with costlier green Hydrogen gas becomes infructous. Further, this exchange of grey with green Hydrogen offsets CO2 emissions completely and hence, there is absolutely no under-mining of climate goals by the Hydrogen Mission as claimed by the two authors.

Now come to the possiblity of economical use of hydrogen gas in the transport sector. It is a fact that energy efficiency in the case of electric vehicles running with lithium-ion batteries is 80% while it is only 40% in case of using fuel cell technology using Hydrogen gas. But this loss in energy efficiency is offset by the loss of energy in electric vehicles due to the heavy weight of the batteries (500 kg in a normal Tesla car with a range of 250kms) with a replacement cycle of 6 years, mtc. costs and long charging period considerations. Conversely, the weight of fuel cells fed by 5kg hydrogen gas capacity tank to run for 500kms is only 56kg. The weight of batteries in case of trucks runs into tonnes and placement requires much larger space than the hydrogen fuel tank. So, combining all these factors, economic diffretia in the two cases is reduced to the minimum. Batteries cannot work in the maritime transport as battery charging stations cannot be set up in the sea routes. So hydrogen gas is the only alternative to run the ships in order to replace the deisel oil. It is nowhere written in the 'Aims and Objects' statement of the Hydrogen Mission that manufacturing capacity of Hydrogen gas will not ex-ceed 10mt per year. More energy firms may enter the arena to make use of the subsidies under the Mission and generation capacity may far exceed the target production of 10mt per year. So , taking into all these considerations into account, the setting up of the Hydrogen Mission with a seed money of Rs. 20000 crore is fully justified provided there is complete transparency in the distribution of sub-sidies. The possibility of exporting surplus hydrogen gas to neighbouring countries is very much there though the two authors deny it completely.

मुगलकालीन किसान आंदोलन

– सूरजभान भारद्वाज

मुगलकालीन किसान आंदोलन से संबंधित इतिहास के विद्वानों ने बहुत कम लिखा है। बहुत पहले इरफान हबीब ने अपनी पुस्तक एग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इंडिया 1963 प्रकाशित की थी। उन्होंने अपनी पुस्तक में मुगलकालीन कृषि विद्रोहों की चर्चा की है। उसके बाद इस विषय पर कोई गंभीर शोध नहीं हुए। हालांकि 1990 के दशक तक किसानों के शोध का इतिहास, विद्यार्थियों में काफी आकर्षण का क्षेत्र माना जाता था। मगर इसके बाद धीरे–धीरे यह विषय शोध के लिए कोई आकर्षण का विषय नहीं रहा। इसका एक कारण तो यह रहा है कि कैंब्रिज स्कूल और अमेरिकन विश्वविद्यालयों में होने वाले इतिहास लेखन में नये तरह के शोधों ने विद्यार्थियों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है, जबकि विद्यार्थियों के लिए यह एक गंभीर शोध का विषय है। जब हम मुगलकालीन या मध्यकालीन इतिहास को पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं तब हमें मुगलकालीन कृषि ढांचे को समझना होगा।

मुगल राजसत्ता कृषि ढांचे पर बनी हुई अर्थव्यवस्था पर टिकी हुई थी। इस अर्थव्यवस्था को सु.ढ़ रूप से चलाने के लिए एक भू–राजस्व नीति बनायी गयी। इस भू–राजस्व नीति की विशेषता यह थी कि प्रत्येक किसान के कृषि उत्पादन का सही आकलन करके राज्य उससे लगभग 40 प्रतिशत भू–राजस्व के रूप में ले लेता था। इसके अलावा उसको कुछ दूसरे कर भी चुकाने पड़ते थे, जो दस्तूरवार (ब्नेजवउंतल) होते थे। परंपरागत रिवाज मानकर हर किसान, राज्य को भू–राजस्व चुकाना अपना एक तरह से दायित्व समझते थे। यदि बहुत अच्छी फसल हुई है तब तो वह खुशी से भू–लगान चुका देता था, यदि फसल उतनी अच्छी नहीं हुई तब उसको भू–लगान चुकाने में परेशानी होती थी क्योंकि उसके अपने परिवार के खाने के लिए कुछ बचता नहीं था। आमतौर से किसान की बढ़िया फसल कम ही होती थी, क्योंकि फसल का अच्छा होना और खराब होना मानसून के अच्छे होने और खराब होने पर निर्भर करता था। सूखा पड़ना आम बात थी। कभी उसकी फसल ओलावृष्टि से खराब हो गयी तो कभी खड़ी फसल कड़ाके की सर्दी ने फूंक दी और कभी तेज आंधी से कटी हुई फसल उड़ गयी, तो कभी बाढ़ में डूब गयी। जब तक किसान की फसल पककर तैयार नहीं होती और अनाज निकलकर उसके घर नहीं आता तब तक वह आसमान की ओर ताकता रहता था। हरध्यान सिंह चौधरी ने एक भजन में किसान के हालात इस प्रकार बयान किये :

पट–पट कै दिन रात कमाया, फिर भी भूखा सोया रै।
अन्नदाता, तेरा हाल देखकर मेरा जीवड़ा रोया रै।।
तेरे बैरी बहोत जगत में, तूं क्यूंकर रहै रूखाला रै।
सूखा, मूसा, चिड़िया, बईयां, गादड़ कर गया चाला रै।
आंधी, धूंध फूल नै खोदे, बुरी आग तैं पाला रै।
औले, बिजली फसल फूंकदे रूखां तक का गाला रै।।
पीपी, टीडी, सुंडी, रोली, कीड़ा, कांदरा यो रोज काढ़ले कोया रै।
अन्नदाता तेरा हाल देखकर मेरा जीवड़ा रोया रै।।

हरियाणवी लोककवि चौधरी हरध्यान सिंह ने अपनी रागनी के माध्यम से यह बताया है कि प्रकृति और जंगली जीव किसान की फसल के इतने सारे दुश्मन होते हैं। भूखा प्यासा रहकर सुबह से शाम तक काम करता है, फिर भी भूखा ही सोता है। इस प्रकार की किसान की दयनीय स्थिति मुगल भारत में समझी जा सकती है। चूंकि मुगल राज्य का जीवित रहना किसान द्वारा पैदा किया गया कृषि उत्पादन से प्राप्त भू–राजस्व पर निर्भर करता था, इसलिए मुगल स्टेट कृषि उत्पादन को बनाये रखने के लिए विशेष ध्यान देता था। जरूरतमंद किसानों को नयी फसल उगाने के लिए महाजनों से तकावी (स्वंद) का भी प्रबंध करवाता था। अकाल के समय ज्यादा से ज्यादा कच्चे कुएं खोदाने के लिए भी किसान को प्रोत्साहित करता था। ज्यादा से ज्यादा जमीन को जुतवाने के लिए अपने अधिकारियों (आमील) को समय समय पर आदेश भी देता था। राज्य का प्रयास रहता था कि ज्यादा से ज्यादा जमीन पर खेती हो, जिससे उसको सर्वाधिक भू–लगान प्राप्त होता रहे। चूंकि बादशाह से लेकर गांव के पटवारी तक सभी कृषि उत्पादन से प्राप्त भू–राजस्व पर जीवित रहते थे, इसलिए मुगल राज्य ने बड़ी संख्या में भू–राजस्व अधिकारियों की नियुक्ति की ताकि वे भू–राजस्व की नीति को सही रूप से एवं सुचारु रूप से लागू कर सकें। साथ ही साथ किसानों से भी दस्तूर के हिसाब से भू–लगान की वसूली करें। इसका काफी हद तक श्रेय मुगल बादशाह अकबर को जाता है जिसने मुगल स्टेट की नींव रखते समय इन सभी बातों पर ध्यान दिया।

भू–राजस्व प्रणाली की तरह मनसबदारी व्यवस्था भी बनायी गयी थी जिसके अंतर्गत मुगल राज्य की सैनिकों के रख–रखाव की व्यवस्था को नियंत्रित किया गया था। इसमें प्रत्येक मनसबदार को अपनी हैसियत (पद और ओहदा) के हिसाब से सैनिकों की संख्या रखनी होती थी। इसके लिए मनसबदारों को उनके वेतन के अनुसार माप करके जागीरें दी जाती थीं। मनसबदारी व्यवस्था जिस पर मुगलों की सैनिक ताकघ्त टिकी हुई थी और भू–लगान व्यवस्था जिस पर मुगल राज्य की आर्थिक नीति टिकी हुई थी . ये दोनों मुगलों की बहुत महत्वपूर्ण संस्थाएं थीं जो एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं, मगर इन दोनों संस्थाओं में एक दूसरे के साथ अंतर्विरोध बना हुआ था क्योंकि मुगल राज्य की यह एक नीति यह थी कि कोई भी मनसबदार अपनी जागीर तीन वर्ष से ज्यादा नहीं रख सकता था, उसका दूसरी जगह की जागीर में तबादला कर

दिया जाता था। यह नियम इसलिए बनाया गया था ताकि लंबे समय तक एक जागीर में रहने से मनसबदार वहां के किसान व जमींदारों के साथ मिलकर ताकघ्तवर न बन जाये, जिससे राज्य को खघ्तरा हो सकता था। इसलिए मनसबदारों के जल्दी–जल्दी तबादलों की नीति अपनायी गयी, इससे बादशाह की ताकघ्त बढ़ती थी। मगर जल्दी–जल्दी तबादलों की नीति ने मनसबदारों की प्रवृत्ति को शोषणकारी बना दिया। मनसबदार को लगता था कि उसका तबादला होने वाला है इसलिए वह चाहता था कि उसकी जागीर से ज़्यादा से ज़्यादा भू–राजस्व की वसूली हो। उसका किसानों के प्रति कोई लगाव नहीं होता था और न ही वह कृषि उत्पादन से संबंधित कोई कल्याणकारी योजनाओं के बारे में सोचता था। बस उसके दिमाग में एक ही बात रहती थी कि ज़्यादा से ज्यादा भू–लगान की वसूली हो।

हालांकि मुगल राज्य ने किसान के पक्ष में कुछ नियम भी बनाये थे जिससे मनसबदारों को किसानों पर ज्यादतियां करने से रोका जा सके। मगर मनसबदारों की किसानों को लूटने की प्रवृति बढ़ती चली गयी और भू–लगान अधिकारी भी किसानों का साथ देने की बजाय मनसबदारों की तरफदारी करते थे। इसलिए किसानों की फरियाद मुगल दरबार में प्रभावहीन हो जाती थी। इससे किसानों में असंतोष बढ़ता ही चला गया। किसानों का असंतोष विद्रोहों में बदलने लगा। सन् 1668 में गोकुला जाट (तिलपत का जमींदार) के नेतृत्व में बड़ी संख्या में किसानों ने मथुरा के इलाके में विद्रोह कर दिया। किसानों ने मथुरा के मुगल नायक फौजदार की हत्या कर दी थी। धीरे–धीरे यह विद्रोह दूसरे इलाकघें में भी फैल गया। मेवात के इलाके में मेव किसानों ने भी विद्रोह कर दिया। नारनौल के आसपास के इलाकों में सन् 1675–76 के सतनामियों ने मुगल सत्ता को चुनौती देते हुए विद्रोह कर दिया। उधर दक्खन में मराठों के भी मुगल सत्ता के खघ्लिाफ विद्रोह शुरू हो गये। इसी तरह मुरादाबाद, गढ़ गंगा, हाथरस, सहारनपुर और हरिद्वार के इलाकघें में भी किसानों ने विद्रोह कर दिये।

मुगल राज्य इस तथ्य को समझने में असमर्थ रहा कि किसान विद्रोह क्यों कर रहे हैं? समस्या कहां पर है? मुगल राज्य ने मनसबदारों को इसके लिए जिम्मेदार मानने की बजाय किसानों को ही जिम्मेदार ठहराया। इसलिए किसानों के विद्रोहों को दबाने के अनेक तरह के कदम उठाये गये। विद्रोही गांव व किसानों को 'जोरतलब' बताकर उनके खघ्लिाफ फौजी कार्रवाई की गयी। मगर किसानों ने अलग–अलग तरीकघे अपना कर, राज्य को अपने असंतोष से अवगत कराया।

मुगल राजसत्ता निरंकुश थी, जिसकी पूरी शक्ति का केंद्र बिंदु मुगल बादशाह होता था। किसानों और मुगल बादशाह के बीच काम करने वाले व मुगल बादशाह को समझाने वाले अनेक एजेंट होते थे। यही कारण होता था कि मुगल बादशाह के पास किसानों की फरियादों को ठीक से नहीं बताया जाता था। जब किसानों को मुगल दरबार में न्याय नहीं मिलता था तब उनकी उम्मीदों का सब्र टूट जाता था और फिर उनके सामने बगावत के अलावा और कोई रास्ता बचता नहीं था। मुगल राज्य ने इस पर गंभीरता से विचार करने के अलावा और इसका समाधान खोजने की बजाय एक दूसरा रास्ता अपना लिया, वह था इजारा व्यवस्था लागू करना। अर्थात् जब किसानों के विद्रोह के कारण शाही मनसबदारों को अपनी–अपनी जागीरों का भू–राजस्व इकठ्ठा करने में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता था तब उन्होंने अपनी जागीरों को इजारा में देना शुरू कर दिया।

इजारा प्रथा एक तरह से ठेकेदारी प्रथा की तरह होती थी जिसमें इजारेदारों को किसानों से भू–लगान इकट्ठा करने का अधिकार दे दिया गया। ज्यादातर इजारेदार वहीं के ही स्वबंस जमींदार या अधिकारी महाजन होते थे जिनकी उस इलाके में दबंगई होती थी। इजारा पाने वाले ज़्यादातर जमींदार वे लोग थे जो किसानों के विद्रोहों का संचालन कर रहे थे या महाजन वे लोग थे जो किसानों को तकघवी स्वयं देते थे। अब ज़्यादातर मनसबदारों ने अपनी जागीरों को इजारा में देना शुरू कर दिया। दरअसल, इजारा व्यवस्था नियमित व्यवस्थित मुगल भू–राजस्व व्यवस्था का उल्लंघन था। किसानों के दृष्टिकोण से यह एक विनाशक व्यवस्था थी। मगर मुगल राज्य के लिए यह भू–राजस्व इकठ्ठा करने का आसान तरीका था जिसमें मनसबदार अपनी जागीरों से भू–लगान इकठ्ठा करने की जिम्मेदारियों से मुक्त थे क्योंकि अब किसानों से उनका कोई सीधा वास्ता नहीं रह गया था।

भू–राजस्व इकठ्ठा करने की सारी जिम्मेदारी इजारेदार की होती थी। आमतौर से इजारेदार अपने इलाके का दबंग होता था जिसके पास अपनी सैनिक टुकड़ियां व छोटे–छोटे किले भी होते थे, जिन्हें 'गढ़ी' बोला जाता था। किसानों से भू–लगान इकठ्ठा करते समय वह अपना खर्च्चा भी भू–लगान के साथ जोड़ लेता था। अर्थात् मनसबदारों के भू–लगान की मांग पूरी करने के बाद वह अपना हक (खर्चा) भी किसानों से भू–लगान के साथ वसूल कर लेता था क्योंकि इजारेदार के अपने लोग होते थे जो किसानों से भू–लगान इकठ्ठा करते थे। इजारेदार को उन्हें भी पैसा देना होता था। इसके अलावा इजारेदार किसानों से अलग से भी कुछ धन इकठ्ठा करता था। इजारेदारों के लिए इजारा प्रथा एक लाभकारी सौदा था जिसको प्राप्त करने के लिए उन्हें शाही मनसबदारों को रिश्वत भी देनी पड़ती थी। अंततः इजारा व्यवस्था पर होने वाला सभी तरह का खर्च किसान से ही वसूला जाता था।

मुगल दरबार से लिखी गयी वकील रिपोर्टों के अनुसार इजारा व्यवस्था को, मुगल साम्राज्य के अधिकांश भू–भाग में, लागू किया गया। किसानों के विरोध के बावजूद भी यह व्यवस्था बलपूर्वक चलती रही। इस व्यवस्था के खघ्लिाफ अनेक इलाकघें में किसानों ने राज्य के खघ्लिाफ बगावत कर दी। जैसे मेवात, पूर्वी राजस्थान, मथुरा, आगरा का इलाकघ, गंगा जमुना का इलाकघ

जिसमें कोल (अलीगढ़), मेरठ, हाथरस, मुरादाबाद और गढ़ गंगा के इलाकघें में किसानों ने नयी इजारा व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह कर दिया। हरिद्वार के इलाके में सभाचंद जाट के नेतृत्व में किसानों ने विद्रोह कर दिया। वकील रिपोर्ट के अनुसार पंजाब के इलाके कलानोर, बटाला, भट्ठा, रोपड़, संगरूर, सरहिंद और लाहौर में किसानों ने बंदा बहादुर के नेतृत्व में बगावत कर दी। मुगल बादशाह ने अब्दुल समद खघन के नेतृत्व में शाही सेना को, पंजाब के किसानों को कुचलने के लिए भेजा । मुगल दरबार में रिपोर्ट आयी कि गुजरात में नर्मदा नदी के आसपास के अहीर किसानों ने वहां के मनसबदार के खिलाफ बगावत कर दी है। उनको दबाने के लिए बादशाह से सहायता मांगी गयी। बंगाल सूबे के जहांगीराबाद के इलाके में किसानों ने इजारा प्रथा के तहत भू–लगान चुकाने से मना कर दिया। मालवा सूबे में मांडू के इलाके में किसानों ने इजारा प्रथा के तहत इजारेदार को भू–लगान चुकाने से मना कर दिया। आमेर राजा का वकील जगजीवन राम पचांली मुगल दरबार से अपने महाराजा को समय समय पर रिपोर्ट भेजकर सूचित करता है, जिनमें वह लिखता है कि अनेक जगहों पर किसानों व शाही फौज के साथ लड़ाइयां हुई हैं, जिनमें बड़ी संख्या में किसान मारे गये। इसके बावजूद किसानों के विद्रोह कम नहीं हो रहे हैं।

मेवात के इलाके में फौज को देखकर किसान काला पहाड़ में छिप जाते हैं। मथुरा भरतपुर के इलाकघें में जाट किसान चूड़ामन जाट के नेतृत्व में अनेक जगहों पर बने आमेर राजा के थानों को हटा दिया था। थूण, सिनसिणी, अंवार, सोगर और कठूंबर में जाटों ने अपनी मजबूत गढ़ियां बना रखी हैं जहां पर जाट, मीणा व मेव किसान छिप जाते थे। हरिद्वार के इलाके में सभाचंद जाट को पकड़ने के लिए सेना भेजी जाती है, मगर खघली हाथ लौटती है, क्योंकि सभाचंद जाट व उसके आदमी श्रीनगर के पहाड़ों में भाग कर छिप जाते हैं। वहां पर सरबुलंदखां की सेना ने हजारों किसानों को बंदी बना लिया है। पंजाब में गुरु बंदा बहादुर को पकड़ने के लिए अनेक बार सेनाएं भेजी गयीं, मगर गुरु कभी तो लाखी जंगल में छिप जाते हैं और कभी नाहन की पहाड़ियों में भाग जाते हैं। इस प्रकार किसानों और मनसबदारों की सेनाओं के बीच अनेक घटनाओं की चर्चा की है। वकील अपनी रिपोर्ट में यह भी लिखता है कि मनसबदार अपने–अपने इलाकों में किसानों को लुटवाते हैं।

आमीलों की रिपोर्ट के अनुसार मुगल दरबार में पटेलों की अगुवाई में अनेक परगनों के किसान फरियाद करने गये। किसानों का कहना होता है कि उनके गांव इजारा में न दिये जायें क्योंकि इजारेदार उनसे भू–लगान के अतिरिक्त तरह–तरह के दूसरे ऐसे करों की जबरन वसूली करते हैं जो उनसे पहले कभी नहीं लिये जाते थे। किसानों का कहना है कि इस प्रकार के करों की उगाही परंपरागत दस्तूरों का उल्लंघन है। इसलिए यह राजधर्म की मर्यादाओं का भी उल्लंघन है। वकील रिपोर्ट बताती है कि किस प्रकार इजारा प्रथा ने किसान को लाचार और बेबस बना दिया है। मराठा पेशवा माधोराव–1 ने अपनी डायरी में लिखा था कि महाराष्ट्र के कोंकण और देश के किसान इजारा प्रथा के कारण बर्बाद हो गये हैं, इसलिए मैं चाहता हूं कि इसे खत्म करके नियमित भू–लगान प्रथा को फिर से लागू किया जाये ताकि वे सुरक्षित महसूस कर सकें। आमेर राजा का वकील अपने महाराजा को इजारा के फायदे बता रहा है कि इससे अनेक प्रकार की सुविधा और लाभ हैं। इस प्रथा के तहत राज्य प्रति वर्ष फसल (रबी और खरीफ) इजारेदार से निर्धारित राशि ले लेता है और चिंता, दुविधा, हानि, आपत्तियां और फायदा। ये सब इजारेदार के जिम्मे रहते हैं।

इस प्रकार इजारा प्रथा किसानों के .ष्टिकोण से एक बहुत ही अत्याचारी और विनाशक संस्था थी जिसने 17वीं सदी के उत्तरार्ध और 18वीं सदी के पूर्वार्ध में एक सुव्यवस्थित नियमित भू–राजस्व प्रणाली को हटाकर जगह ले ली थी। मगर राज्य के लिए यह एक आरामदायक व सुविधापरक तरीका था जिसमें किसानों से भू–लगान वसूलने की पूरी जिम्मेदारी इजारेदार की होती थी। निस्संदेह इजारेदार भी इस प्रथा के तहत अपना अच्छा मुनाफा कमाता था तभी तो यह प्रथा बहुत जल्दी से प्रचलन में आयी थी। किसानों के इस प्रथा के विरोध के तरीके केवल लड़ना मरना ही नहीं था बल्कि गांव के उजाड़ के बाद कहीं दूसरी जगह चले जाना और खेती लायकध जमीन पर खेती न करना उसे बंजर छोड़ना, भू–लगान न चुकाना और पकी हुई फसल को काटकर चोरी करना आदि भी विरोध के तरीके थे। परगना अधिकारी आमील अपनी रिपोर्ट में लिखता है कि अलवर सरकार के अनेक परगनों में बहुत से गांव उजड़ गये हैं। परगना पहाड़ी में कुल 209 में से 100 गांव उजड़ गये हैं। परगना खोहरी के काफी गांव के किसान थूण के किले में भाग गये हैं। परगना ब्याना में कुल 139 गांव जिनमें 33 गांव उजड़ गये हैं और 42 गांव जोरतलब हैं अर्थात 42 गांव के किसानों ने भू–लगान चुकाने से मना कर दिया है। परगना गुढ़ा, लिवाली और लालसोट में किसान खड़ी फसल को काटकर ले जा रहे हैं। इस प्रकार के अनेक उदाहरण राजस्थानी दस्तावेजों (अठसठा और अर्जदासत) में भरे पड़े हैं।

इजारा प्रथा का प्रभाव यह हुआ कि 18वीं सदी के पूर्वार्ध में कृषि उत्पादन में तेजी से गिरावट आयी। अनेक परगनों में गांव उजड़ने लगे। खेती लायकध जमीन बंजर हो गयी। खेत चरागाहों में बदल गये क्योंकि किसानों को लगता था कि खेती करके भी उसे भूखा ही रहना है। इजारा प्रथा में भारी भू–लगान चुकाने के बाद परिवार के भरण–पोषण के लिए कुछ नहीं बचता था। इसलिए अनेक गांव के किसान गांवों को खाली करके रोटी की तलाश में जहां उन्हें ठीक लगता था वहां चले जाते थे या फिर विद्रोही जमींदारों की गढ़ी या जंगल और पहाड़ों में छिप जाते थे। खेती न करने से कृषि उत्पादन पर बुरा असर पड़ा। मुगल साम्राज्य का वैभव, शासक वर्ग व अमीरों की शान–शौकत, शाही फौज,

नौकरशाही। सभी कृषि उपज की आमदनी पर निर्भर थे अर्थात् किसान की पैदावार से 40 से 50 प्रतिशत तक मुगल राज्य भू–राजस्व के रूप में लेता था जिस पर मुगल राज्य की अर्थव्यवस्था टिकी हुई थी। कृषि उत्पादन में गिरावट आने से मुगल राज्य को कृषि संकट का सामना करना पड़ा जिससे उसे एक भयंकर आर्थिक संकट झेलना पड़ा, अब भू–राजस्व बहुत कम मिलने लगा। मुगल राज्य के लिए इतनी बड़ी फौज का रख–रखाव करना व कुलीन वर्ग की आवश्यकताओं को पूरा करना मुश्किल हो गया। परिणाम स्वरूप मुगल साम्राज्य बिखर गया।

मुगल राज्य को यह आभास नहीं हो रहा था कि जिस इजारा व्यवस्था को अपनी जिम्मेवारी से मुक्त होकर आरामदायक प्रथा के रूप में लागू कर रहा है वही उसकी जड़ों को खोखला भी कर रही है। इतिहासकारों का एक वर्ग इजारा व्यवस्था को किसानों के दृष्टिकोण से मूल्यांकन न करके इजारेदारों के .ष्टिकोण से देखते हैं। वे लोग इसे व्यापार व वाणिज्य को बढ़ाने के लिए पूंजी संचय के उदगम का रास्ता मानते हैं। मगर वे इस तथ्य को समझना नहीं चाहते कि जब इजारा व्यवस्था ने इतने शक्तिशाली विशाल मुगल साम्राज्य को निगल लिया तब व्यापारिक पूंजी संचय का सवाल कहां पैदा होता है? यह दलील भी ठीक उसी प्रकार से है जिस प्रकार आज के शासक, नये कृषि कानूनों को, .षकों के . ष्टिकोण से न समझकर उनके फायदे की बात करते हैं।

भले ही आज किसानों का इतिहास शोध के लिए एक आकर्षण का केंद्र न रहा हो, मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय इतिहास का स्वरूप किसानों के संघर्षों की गाथाओं की विरासत है। राज्यों के निर्माण की प्रक्रियाएं किसानों के बगैर संभव नहीं थी। इसी के साथ साथ विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों का भी विकास हुआ था। तभी त हिंदू धर्मशास्त्रों में राजधर्म और प्रजा धर्म जैसी अवधारणाओं पर जोर दिया गया। इसलिए किसानों के बगैर जगत मिथ्या है। राजधर्म में राजा को अपनी प्रजा (किसान) के साथ पुत्रों जैसा व्यवहार करना चाहिए इसलिए न्यायप्रिय राजा की अवधारणा को उत्तम माना गया। यही कारण रहा है कि विक्रमादित्य जैसे न्यायप्रिय राजा की कहानियां किसानों में लोकप्रिय रही हैं। कौटिल्य ने भी इस बात पर जोर दिया था कि राजा के मंत्री को किसानों के साथ अपना निवास बनाकर रहना चाहिए ताकि राज्य निष्पक्ष होकर उनकी समस्याओं का निराकरण कर सके।

भारत में मुस्लिम शासकों ने भी किसानी पर ही पूरा जोर दिया था। उनकी भारतीय जाति व्यवस्था, परंपराएं व रीति–रिवाजों में हस्तक्षेप करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने किसानी को इतना प्रोत्साहन दिया कि बड़े–बड़े जंगलों को खेतों में बदल दिया गया और वहां पर नये–नये गांव व कस्बों का प्रसार हुआ जिससे व्यापार व वाणिज्य को भी बढ़ावा मिला। फिरोजशाह तुगलक का उदाहरण हमारे सामने है जिसने सिरसा से हांसी तक फैले बीहड़ जंगल को नहरों के जल से हरे–भरे खेतों में बदल दिया जिसके कारण वह इलाका नये–नये गांवों व कस्बों से भर गया। इस संबंध में जाट किसानों का इतिहास बहुत ही दिलचस्प है।

मुस्लिम शासकों ने जाट किसानों को बसाने में व प्रोत्साहन देने में बहुत योगदान दिया था। तभी तो लाहौर से लेकर आगरा तक जाट किसानों की बस्तियां इतनी ज़्यादा मिलती हैं। इसलिए किसानों का राजसत्ता के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा है। जैसे भारत में मुस्लिम राजसत्ता। दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगल साम्राज्य के निर्माण में किसानों का योगदान अहम रहा है वैसे ही जोधपुर व बीकानेर राजपूत राज्यों के निर्माण में जाट किसानों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। इसी तरह आमेर (जयपुर), कोटा व बूंदी राजपूत राज्यों के निर्माण में मीणा जाति के किसानों की भूमिका को इतिहास में दर्ज किया गया है। किसान ने अपनी कृषि पैदावार से शासकों की संपन्नता और उसकी सार्वभौमिक ताकत को बढ़ाया है। इसके बदले में वह शासक से न्याय की उम्मीद करता है जो एक लोक कहावत से समझी जा सकती है :

दस चगें बैल देख, वा दसमन बेरी।
हक हिसाबी न्याय, वा साकसीर जोरी।।
भूरी भैंस का दूधा, वा राबड़ घोलणा।
इतना दे करतार, तो बाहिर ना बोलना।।

LIST OF DONORS

Sh. Deshpal Tomar **500000.00**
909, Sector 3 Kurukshetra

Mr. Shameer S. Virk, U.S.A. **125000.00**
87, Cudworth Lane, Sudbury, U.S.A.

Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.) **51000.00**
222, Sector 36-A, Chandigarh.

Gram Panchayat Shamlokalan **23500.00**
Distt. Jind (Haryana)

Sh. Devender Malik **22500.00**
2697, Sector 21, Panchkula.

Sh. Somvir Singh, VPO: Bhawar **21000.00**
Distt. Sonepat (Haryana)

Maj. Mandeep Singh (Rtd.) **21000.00**
B-1/40, DLF Valley Panchkula.

Dr. Ramkesh Kharb **21000.00**
12-A, Ch. Complex, Sector 12-A, Panchkula.

Sh. Ram Niwas Lohan, Advocate **21000.00**
Flat No 12, GH-7, MDC Sect. 5, Panchkula.

Sh. Pulkit Malik s/o Sh. Satya Pal Malik **21000.00**
F-5, HMT Officers Colony, Pinjore (Panchkula)

Sh. Vijyant Dalal **21000.00**
572/28, Subhash Nagar, Rohtak

Sh. Sanjay Kumar **21000.00**
Flat No. 404, GH 11, Sector 24, Panchkula

Sh. Brig. Subhash Chander Rangi **21000.00**
6374-B, Rajiv Vihar, Manimajra

Ch. Sukhnandan Kumar, Ex-Minister **21000.00**
Vill: Gajansoo, Distt. Jammu (J &K)

Smt. Kavita Dhanda **21000.00**
771, Sector 4 Panchkula.

Sh. Ram Niwas Singh **21000.00**
Krishi Complex, Sector 21 Panchkula.

Sh. Pardeep Kumar **21000.00**
VPO: Halalpur Distt. Sonepat

Dr. Jogender Singh **21000.00**
415, Sector 14, Rohtak.

Sh. Raj Kapoor Malik **13200.00**
969, Sector 26, Panchkula

Sh. Daryao Singh Malik **11000.00**
233 Sector 8, Karnal

Sh. Jasmer Singh **11000.00**
VPO: Bilaspur, Distt. Yamuna Nagar.

Sh. Bhup Singh Ahlawat **11000.00**
2705 Sector 21, Panchkula

Sh. Virendar Singh Punia **11000.00**
507, Sector 21 Panchkula.

Dr. Sarita Malik, HCS **11000.00**
222, Sector 36-A, Chandigarh.

Ms. Sarika Malik, Distt. Drug Controller **11000.00**
171, Sector 7, Panchkula.

Sh. Bhisham Singh Bishraw **10000.00**
President, Jat Maha Sabha Nagpur.

Sh. Raj Karan
101, Sector 22, Chandigarh.

Sh. Jai Singh Hooda **10000.00**

Sh. Mahender Singh Kundu **8000.00**
DLF Valley Pinjoe (Panchkula).

Mrs. Urmila Kumari **5100.00**
w/o Late Ch. Gurnam Singh, IFS (Rtd.)
485, Sector 6, Panchkula.

Sh. Hardeep Singh Malik, DSP (Rtd.) **5100.00**
Sector 6, Panchkula

Sh. V. P. Dewsal **5100.00**
623, Sector 7, Panchkula.

Sh. Wazir Singh **3300.00**
696, Eco. City Chandigarh.

Sh. Attar Singh Pawar **3200.00**
969, Sector 26, Panchkula.

Sh. Ram Phal Nain **3200.00**
671, Sector 21, Panchkula.

Sh. Mahender Singh Sheoran **2500.00**
501, Sector 23, Panchkula.

Sh. Naresh Dahiya **2200.00**
1378, Sector 21, Panchkula.

Sh. Anand Singh **2200.00**
1378, Sector 21, Panchkula.

Sh. Mahabir Singh **2200.00**
516, Sector 21, Panchkula.

Sh. Ashok Kumar Sheokand **2200.00**
284-P, Sector 12, Panchkula

Sh. Pritam Singh **2200.00**
778, Sector 27, Panchkula.

Sh. Har Narain DSP (Rtd.) **2100.00**
Near Satsang Bhawan, Bhiwani.

Sh. Harpal Chaudhary **2100.00**
316, Sector 9, Panchkula.

Sh. Jai Singh Dudi **2100.00**
Flat No. C-34, GH-92, Sector 20 Panchkula

Sh. Wazir Singh Kharb **2100.00**
1589, Sector 25, Panchkula.

Sh. Manbir Singh Sangwan **2100.00**
400, Sector 27, Panchkula.

Sh. J. S. Dhillon **2100.00**
1330, Sector 21, Panchkula.

Ms. Dinaz Malik **2100.00**
6319-A, Rajiv Vihar, Manimajra.

Sh. Tanvir Singh Malik **2100.00**
6319-A, Rajiv Vihar, Manimajra.

Sh. B. S. Gill **2100.00**
43, Sector 12-A, Panchkula.

Sh. Rajender Singh Kharb **1100.00**
3, Golden Enclave, Zirakpur

Sh. Rajbir Rajain **1100.00**
991/34, Vijay Nagar, Rohtak

Sh. Ram Niwas, Barbar **1100.00**
VPO: Shamlokalan, Distt. Jind.

Dr. Dharam Pal Laura **1100.00**
132, Sector 21, Panchkula.

Sh. Ishwar Singh Malik **1100.00**
2511, Sector 21, Panchkula.

Sh. Mewa Singh Dhull **1100.00**
VPO: Harsola, Distt. Kaithal.

Sh. Mahendar Singh Kaliraman **1100.00**
1697, Sector 15, Panchkula.

Sh. S. S. Narwal # 90, Sector 10, Panchkula.	**1100.00**	**Sh. Richhpal Singh Punia** VPO: Bichpari, Distt. Sonepat.	**1100.00**
Sh. Narendar Singh Dangi # 1314, Sector 26 Panchkula.	**1100.00**	**Master Hoshiar Singh** VPO: Mersha, Distt. Jind.	**1100.00**
Sh. Mahavir Singh Chhikara # 204, GH-107, Sector 20, Panchkula.	**1100.00**	**Sh. Rakesh Gill** # 922, Sector 25, Panchkula.	**1100.00**
Sh. Jai Singh Jatyan # 898, Sector 11, Panchkula.	**1100.00**	**Sh. D. P. Dhankar, DIG (Rtd.) ITBP** # 24, Tribune Society, Raipur Khurd, U.T.	**1100.00**
Sh. Randhir Singh Jaglan, Advocate # 898, Sector 16, Panchkula.	**1100.00**	**Mrs. Gajali Devi** D.S & D. Department, Haryana	**1100.00**

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB February, 92) 31/5'3" M.A. Economics, B.Ed. Working as Teacher in private school. Father Inspector retired from Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944
- SM4 Jat Girl 27/5'2" B.Tech (Computer Science). Working as Senior Software Engineer in MNC Gurugram. Father working in Maruti Udyog Gurugram. Avoid Gotras: Kundu, Mann, Deswal. Cont.: 9911345305, 7678335583
- SM4 Jat Girl (DOB 05.01.98) 25/5'6" B. Sc, B.Ed. HTET, CTET qualified. Preparing for competitive exams. Employed as JBT teacher through SSA in Chandigarh. Father in Haryana Government. Mother housewife. Brother in Central Govt. Gotras: Kaliraman, Panghal, Punia. Cont.: 9992394448
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 31/5'4" B. A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Government Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Family settled in own house at Pinjore (Panchkula). Preferred match from tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB August 95) 27/5'11" M.A., Math, Economics. B.Ed. Working as Teacher in private school at Panchkula. Father Ex-serviceman (Army). Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Gowadhiya. Cont.: 8054064580.
- SM4 Jat Girl (DOB 02.06.96) 26/5'4" M.Sc. Chemistry from Punjab University Chandigarh. B.Ed. Employed in AXIS Bank, Salary Rs. 22000/- PM. Father in agriculture department Panchkula.. Avoid Gotras: Bhanwala, Narwal, Beniwal. Cont.: 9872789567.
- SM4 Jat Girl (DOB 28.8.91) 31/5'2" M.Sc. (Math), M.Sc. Psychology (Gold Medalist) PG Diploma Guidance & Counselling, B.Ed., (CTET, PRT &TGT), HTET (PGT). Employed as Counsellor. Father retired Kanungo. Mother Housewife. Family settled at Bhiwani (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Jhajhariya, Rohz. Ahlawat, Panwar Direct. Cont.: 9992075101
- SM4 Jat Girl (DOB 30.06.94) 28/5'8" M.Com from Punjab University, Pursuing B.Ed. from Punjabi University on regular basis. Pursuing Bachelor of library and information sciences from IGNU on private basis. Father retired Inspector Chandigarh Police. Mother Housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Kadyan, Antil, Sangwan. Cont.: 9888333315, 9877533194
- SM4 Jat Girl (likely to be divorced) (DOB 01.01.91) 33/5'6" M.B.B.S (in Government Hospital). Family settled at Bhiwani (Haryana). Preferred divorced match. Avoid Gotras: Sangwan. Cont.: 9811557266
- SM4 Jat Girl (DOB 06.08.97) 25/5'4" B.Sc Nursing from PGI Chandigarh. Working as Nursing Officer in PGI Chandigarh. Planning to settle in abroad. Currently living in Chandigarh. Father retired from HMT Pinjore. Mother housewife. Family settled at Pinjore (Haryana). Avoid Gotras: Malik, Malhan, Sangwan. Cont.: 9896323446, 9518419060
- SM4 Jat Girl (DOB 22.10.94) 28/5'5" B.Tech from UIET Rohtak. M. Tech. from P.U. Chandigarh. Currently living in Toranto, Canada. Father retired from HMT Pinjore. Mother housewife. Family settled at Pinjore (Haryana). Avoid Gotras: Malik, Malhan, Sangwan. Cont.: 9896323446, 9518419060.
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Pursuing Ph.D from P. U. Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950.
- SM4 Jat Girl (DOB 13.03.95) 28/5'4" B.Sc. Chemistry (Hons.). MBA (Hospital & Management). Own Marketing Agency named Caffeinated Crew. Family settled at Panipat (Haryana). Currently residing at Gurgaon. Avoid Gotras: Jaglan, Gehlayan, Bhanwala. Cont.: 9910167700.
- SM4 Jat Girl (DOB 18. 08. 97) 25/5'7" M.Sc. (Zoology). NET, CTET Qualified. B.Ed. final year. Father in Government job. Avoid Gotras: Goyat, Tomar, Chahal. Cont.: 9992330980.
- SM4 Jat Girl (DOB 04.09.94) 28/5'4" B.Sc., M.A (English Literature), B.Ed. Father in Government job. Mother housewife. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Sehrawat, Panwar. Cont.: 9915964189.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.11.97) 25/5'5" B.A. M. A. (Hindi), D.Ed. Ed., JBT. Father in Government job. Mother housewife. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Sehrawat, Panwar. Cont.: 9915964189.
- SM4 Jat Girl (DOB Jan. 93) 30/5'5" B.Com. Sub Inspector in CAPF. with package Rs. Seven lakh PA. Father retired Labour Inspector. Mother in Government job in P.S.U. Avoid Gotras: Dangi, Malik, Nandal. Cont.: 8901049242.
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department,

Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298.

- SM4 Jat Boy (DOB 01.10.99) 24/5'9" Bachelors of arts (PU) Presently . Pursuing LLB (PU). Father ASI in Chandigarh police. Family settled at Chandigarh; Mother Superintendent in Director Panchayat, Haryana. Avoid Gotras: Pannu , Saharan, Rathi. Cont.: 9463188730, 9463188725.
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'4" Graduate. Employed in private job. Father retired from Government job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747.
- SM4 Jat Boy (DOB March 93) 30/5'10" B. A. Handling sales at Philips. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944.
- SM4 Jat Boy (DOB 28.02.96) 27/5'7" M.A. (Result awaited). Employed as DEO in M.C. Chandigarh. Salary above Rs. 25 thousand. Father working in M.C. Chandigarh. Mother teacher in private school. Avoid Gotras: Malik, Dahiya, Hooda. Cont.: 9876828176, 9872940624.
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 30/6feet B. Tech. Employed as Assistant Manager in Jai Parvati Forge ltd. Near Derabasi (Punjab). Income Rs. Six lakh P.A. Father retired from Government. Mother housewife. Family settled in own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Kadyan. Cont.: 9876620351
- SM4 Jat Boy (DOB 27.01.90) 33/5'9" B.I.M (KUK), MBA (GJU), LLB from KUK. Legal practice in Punjab & Haryana High Court. Living in New Chandigarh (Omax). Father Advocate, Mother School Lecturer. 11 acre agriculture land. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Sindhu. Cont.: 9896016828, 9813144808.
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 25/6 feet. B.Tech (Computer Science). MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software Pune (work from home) with package of Rs. 16 lakh+ PA. Father retired as Supervisor from HMT Pinjore. Mother housewife. Family settled in own house at Pinjore (Panchkula). Own Coaching Institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881.
- SM4 Jat Boy (DOB 09.06.93) 29/5'8" U.G., Diploma in Civil Engineering. Employed in Indian Air Force. Father retired Kanungo. Mother Housewife. Family settled at Bhiwani (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Jhajhariya, Rohz. Ahlawat, Panwar Direct. Cont.: 9992075101.
- SM4 Jat Boy (DOB 10.5.96) 26/6'1" MBA Marketing & Finance. Working as Assistant Manager in HDFC Chandigarh. Father in Government Job. Mother Housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Saroha, Malik, Sehrawat. Cont.: 9463384601.
- SM4 Jat Boy 27/5'10" B.Tech. (Mechanical). Employed in MNC Noida with package of Rs. 10 lakh PA. Father retired Inspector Chandigarh Police. Mother Housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lohchab, Hooda, Dhankhar. Cont.: 8146991568, 9877640592
- SM4 Jat Boy (DOB 21.11.93) 29/5'8" B.Tech. (Civil) from K. U. Kurukshetra. Working as Assistant Manager in Union Bank of India. Father retired Accountant from Harco Bank. Mother Housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Dhanda, Dhatarwal. Cont.: 9478358188
- SM4 Jat Boy (DOB 14.01.93) 30/ Graduation -PG Cyber Security & Computer Forensics. B.Tech. (Computer Science & Engineering) Resident at Chandigarh. Canada (PR). Mother in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Kaliraman, Antil, Punia, Malik. Cont.: 9530713163
- SM4 Jat Boy (DOB 19. 12.94) 28/ Graduation -BSc. Non-medical. Diploma in Professional Lookery. Resident at Chandigarh. Newzealand (PR). Mother in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Kaliraman, Antil, Punia, Malik. Cont.: 9530713163
- SM4 Jat Boy (DOB 18.11.94) 28/5'9" B.A. M.A., B.Ed. Master in Sociology. One year computer course. Own coaching centre with income Rs. 45000-50000. Father in Punjab Home Guard & Civil Defense Department. Family settled at Nayagaon (Punjab). Avoid Gotras: Lohchab, Dahiya, Gahlan, Hooda, Dalal. Cont.: 9888572592, 7009317068
- SM4 Jat Boy (DOB 01.01.98) 25/5'6" Working as Data Entry Operator on contract basis in B.B.M.B. Chandigarh. Father in Government job. Avoid Gotras: Beniwal, Garhwal, Lamboria. Cont.: 9416249841
- SM4 Jat Boy (DOB 30.08.95) 27/5'10" B.A. Working as Clerk in Irrigation Department Panchkula on contract basis. Father employed in C.M. Cell Haryana. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Duhan, Sheoran. Cont.: 9417088089, 9999973190
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.98) 24/5'11" B.Sc. Agriculture from PDM Bahadurgarh. Business Management from U. K. (England). Job in U. K. with Rs. 2.50 Lakh P.M. Father own business. Mother in PGI Rohtak. Wanted B.Sc. Nursing girl willing to shift in U. K. after marriage. Avoid Gotras: Sheokand, Kalkandha, Nain. Cont.: 9466690944, 8396090944
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05. 94) 28/6'3" B. Tech (Mechanical). Settled in Canada. Father in Government job in Haryana. Mother Government teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Sayan, Punia. Cont.: 9417303470, 9416877531.
- SM4 Jat Boy (DOB 27. 04. 89) 33/5'10" B. Tech in Bio-Medical Engineering. Currently working in a reputed Masters' Medical Company with package Rs. 27 lac PA. Father's own business of Medical equipments. Mother housewife. Avoid Gotras: Jattain, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.

प्रियंका पुनिया टेक्नोलॉजी इम्पॉवमेंट काडंसिल की नेशनल प्रेसिडेंट बनाई गई

वीमेंस इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने पाई अकेडमी, पंचकूला की संस्थापक तथा समाज सेविका प्रियंका पुनिया को टेक्नोलॉजी इम्पॉवरमेंट कॉसिल इंडिया का नेशनल प्रेसिडेंट मनोनीत किया है। चेम्बर महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने तथा उनके लिए बिजनेस के नए अवसर प्रदान करने वाला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का संगठन है। ये संगठन सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों से मिलकर अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का वहन भी करता है। पुनिया का कहना है कि टेक्नोलॉजी इम्पॉवरमेंट काउंसिल का उद्देश्य बच्चों के 21वीं सदी के अनुरूप टेकनिकल स्किल का विकास करना है।

जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और उनके व समस्त परिवार के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

किसान-पुत्र महान् कृषि वैज्ञानिक डा. रामधन सिंह हुड्डा

17 अप्रैल, 1977 को पुण्यतिथि पर उन्हें शत शत नमन.....

– आर.के. मलिक,
महासचिव, जाट सभा

किसान–पुत्र डा. रामधन सिंह जी ने गुणवत्ता में सर्वोत्तम गेंहू C-306, बासमती–370 ईजाद करके 1925–45 में दुनिया को हरितक्रांति की राह दिखाई! जिस महान् मानव के कारण दुनिया के 100 करोड़ लोग भूखे मरने से बचे (1960 के दशक में) उनको जानें.....!!! जी ,मैं बात कर रहा हूँ 'हरित क्रांति' के अग्रदूत विश्व–विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह हुड्डा जी की।

1 मई 1891 में रोहतक जिले के किलोई गांव में साधारण किसान के घर इस असाधारण बालक ने जन्म लिया। हमारी जाट बिरादरी से शायद पहले होंगे जो लंदन कैम्ब्रिज में पढ़ने गए। प्राकृतिक विज्ञान और कृषि में Ph-D करने के बाद 1925 में Punjab Agriculture College and Research Institute, Layallpur (Punjab) में प्रिंसिपल लगे। 1947 में रिटायरमेंट तक वहीं रहकर भारत ही नहीं, दुनिया के लिए गेहूं, जौ, धान, दाल, गन्ने की नई किस्में इजाद की थी।

Canada और Mexico ने सबसे पहले इनकी गेहूं C-591 अपनाई और पैदावार के रिकॉर्ड बनाये।

C-217, C-228, 250, 253, 273, 281 और C-285, C-518 उनकी मुख्य गेहूं varieties हैं।

जिस C-306 गेहूं को सबसे स्वादिष्ट माना जाता है उसे डॉ. रामधन सिंह जी ने ईजाद किया था। संसार में मशहूर बासमती चावल 370 और Jhona 349 भी डॉ. रामधन जी की ही देन हैं।

उनके योगदान का अंदाजा यों लगा सकते हो, जिसको Mexico से नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. Norman E Borlog 1963 में डॉक्टर रामधन सिंह जी से Sonipat उनके घर पर मिलने आए और रामधन सिंह जी के पैर छू कर कहें – आपने संसार को बेहतर किस्में देकर 100 करोड़ लोगों को भूखे मरने से बचा लिया – और खुशी से रो दिए।

1965 में लाल बहादुर शास्त्री जी ने डॉ. रामधन सिंह जी को किसी भी राज्य के Governor बनने के लिए कहा था लेकिन डॉक्टर रामधन सिंह जी ने कहा राज्यपाल बनने से ज्यादा भला मैं वैज्ञानिक के तौर पर कर सकता हूँ देश का। और उन्होंने ऐसा किया भी।

1961 में पाकिस्तान ने डॉ रामधन सिंह जी को राष्ट्रपति गोल्ड मैडल से सम्मानित किया और वह यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय बने।

17 अप्रैल 1977 को डॉ रामधन सिंह जी इस संसार को अलविदा कह गए लेकिन सबको जिंदा रहने के लिए अथाह अनाज भंडार दे गए।

हम क्यों नही जन्मदिन मनाते उनका? खाते हैं 306, 370 और चूसते हैं गन्ना 312 जिनका? सबको बताएं महान् किसान पुत्र की महान् देन दुनिया को। डॉ रामधन सिंह हुड्डा जी अमर हैं।

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन :
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।